भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार की संस्था
The Jute Corporation Of India Limited
A Government of India Enterprise under Ministry of Textiles

भापनि

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

पटसन ज्योति

सितम्बर, 2024

अंक 9

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड, प्रधान कार्यालय, कोलकाता की वार्षिक गृह हिंदी पत्रिका

दिनांक 14.08.2024 को वृक्षारोपण करते हुए अधिकारीगण/कर्मचारीगण

दिनांक 28.08.2024 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता द्वारा इस कार्यालय को पुरस्कृत किया गया

निगम द्वारा सीएसआर के अंतर्गत दिनांक 31.01.2024 को सरोज गुप्ता कैंसर सेंटर एवं रिसर्च इंस्टीट्यूट, कोलकाता को एंबुलेंस प्रदान किया गया

पटसन ज्योति परिवार

पटसन ज्योति

प्रधान कार्यालय कोलकाता की वार्षिक गृह हिंदी पत्रिका, अंक-9, सितम्बर 2024

संरक्षक

श्री अजय कुमार जॉली
प्रबंध निदेशक
भापनि, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मुख्य संपादक
श्री रमेश कुमार
मुख्य प्रबंधक (वित्त) एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री कल्याण कुमार मजुमदार
महाप्रबंधक (परि./विप.)

श्री शान्तनू चक्रवर्ती
उप महाप्रबंधक (वित्त)

श्री बी.एन.भंसाली
मुख्य प्रबंधक (परि./विप.)

श्री अभिक साहा
कंपनी सचिव

श्रीमती संदीपा सेन दत्ता
मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन)

श्री जे.पी.के. मंडल
वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी)

भापनि

अनुक्रमणिका

क्र.सं.		शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1	संदेश	प्रबंध निदेशक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता	श्री अजय कुमार जॉली	4
2		संपादकीय, मुख्य प्रबंधक (वित्त) एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा)	श्री रमेश कुमार	5
3	आलेख, कहानियाँ एवं अन्य रचनाएँ	न्यू मार्केट से न्यू टाउन	तारकेश्वर सिंह	6
4		व्यक्तिगत जीवन में वित्तीय प्रबंधन	रमेश कुमार	7
5		जूट हस्तशिल्प के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना	विश्वजीत पाल	8
6		जूट क्रांति : प्लास्टिक का एक संधारणीय विकल्प	मो. जीशान अली	9
7		कार्यालय और हम	नीरज कुमार	10
8		ईश्वर का निर्णय	कमल कान्त शर्मा	11
9		पूंजी बजटिंग	शांतनू चक्रवर्ती	12
10		महिला सशक्तिकरण	रवि कुमार	13
11		राष्ट्रीय खेल दिवस	संदिपा सेन दत्ता	15
12		उत्तर पूर्वी राज्यों में हस्तशिल्प और हस्तकरघा की उपलब्धियां और विकास	अनिक कुमार दे	16
13		लद्दाख : भारत का बर्फीला रेगिस्तानी स्वर्ग	उदय चौरसिया	17
14		नकदी रहित भारत	योगेंद्र कुमार शर्मा	18
15		कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी	अभिक साहा	19
16		केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम और भापनि के मानव संसाधन विभाग	मनीष श्रीवास्तव	20
17		सुरक्षित कॉल की वॉर : भारत में महिला सुरक्षा	दिनी मजुमदार राय	22
18		ज्ञान की बात	बी.एन. भंसाली	23
19		योग	वरुण कुमार पोद्दार	24
20	काव्यांजली	किसी किताब को उसके आवरण से न आँके	राजेश कुमार चौधरी	26
21		हर घर तिरंगा	तोइशब ज्योति गोहाई	26
22		कलम की ताकत	श्वेता कुमारी	27
23		जिंदगी	नवजीत दास	27
24		नैतिकता या लाभ	विनय गहलावत	27
25		जा बेटी तू पराई है	श्रीराम सिंह	28
26		बेटी बचाएँ - बेटी पढ़ाएँ	सुरजीत मंडल	28
27		बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ	नारायण सरकार	28
28		पटसन की खुशबू	शशांक प्रताप	29
29		पाट की आत्मकथा	शंभू प्रसाद सिंह	29
30		चाँदनी रात	पुरुषोत्तम हरि	30
31		गमले में आदमी	जालपा भटनागर	30
32		विविध गतिविधियां		31

हमारे निगम द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ

प्रकाशन सम्पर्क सूत्र

हिंदी विभाग, भारतीय पटसन निगम लिमिटेड, पटसन भवन 3री और 4थी मंजिल, ब्लॉक सी एफ, एक्शन एरिया - 1, न्यू टाउन, कोलकाता 700156

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए पटसन ज्योति परिवार, संपादक एवं प्रबंधकीय मंडल का किसी प्रकार से कोई उत्तरदायित्व नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : nandlal@anjaniprakashan.com

प्रबंध निदेशक की कलम से...

अजय कुमार जॉली
प्रबंध निदेशक
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

प्रिय साथियों,

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन के प्रति हमारी संस्थान की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने के इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर आप सभी को मेरा हार्दिक अभिनंदन। भारतीय पटसन निगम लिमिटेड ने हमेशा से न केवल व्यावसायिक क्षेत्र में उत्कृष्टता के मानदंड स्थापित किए हैं, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन और उसके प्रभावी उपयोग में भी एक मिसाल कायम की है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति का उद्देश्य केवल हिंदी का प्रयोग बढ़ाना नहीं है, बल्कि इसे हमारे कार्यसंस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाना है। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और देश की एकता का भी प्रतीक है। हिंदी में कार्य करने से हमारे संचार में स्पष्टता और सादगी आती है, जो संस्थान की कार्यकुशलता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है।

मुझे गर्व है कि हमारी समिति ने राजभाषा अधिनियम के नियमों का पालन करते हुए संस्थान के सभी विभागों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। प्रशिक्षण सत्र, कार्यशालाएँ, और प्रतियोगिताओं के माध्यम से हमने यह सुनिश्चित किया है कि हमारे कर्मचारी हिंदी में दक्षता प्राप्त करें और इसे आत्मविश्वास के साथ अपने कार्यों में अपनाएँ।

इसके साथ ही, यह हमारा कर्तव्य भी है कि हम हिंदी भाषा के विकास और संवर्धन के लिए नए-नए उपाय खोजें और उन्हें अपने कार्यों में लागू करें। आधुनिक तकनीक और डिजिटल उपकरणों के माध्यम से हिंदी में कार्य करना अब पहले से कहीं अधिक सरल हो गया है, और हमें इस अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहिए।

मैं सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने राजभाषा के सफल क्रियान्वयन में अपना योगदान दिया है। विशेष रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों का, जिन्होंने समर्पण और निष्ठा के साथ इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास किए हैं।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हम राजभाषा हिंदी के प्रयोग को न केवल अपने कार्यक्षेत्र में बल्कि अपने जीवन में भी अपनाएँगे। हिंदी केवल हमारी भाषा नहीं, यह हमारी आत्मा है, जो हमारे विचारों और मूल्यों को प्रकट करती है।

इस दिशा में हमारी निरंतर प्रगति ही भारतीय पटसन निगम लिमिटेड को नए आयामों तक पहुँचाएगी।

धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

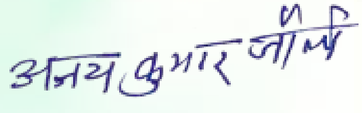

(अजय कुमार जॉली)

संपादकीय

रमेश कुमार
मुख्य प्रबंधक (वित्त) एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा)
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

प्रिय पाठकवृंद,

हमें गर्व और हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके हाथों में पटसन ज्योति का यह विशेष अंक पहुँच रहा है। यह पत्रिका केवल एक साहित्यिक मंच नहीं है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और हमारे संस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का माध्यम भी है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल राजभाषा हिंदी के महत्व को उजागर करते हैं, बल्कि उसके विकास और प्रसार में योगदान देने का प्रयास भी करते हैं।

पटसन ज्योति के इस अंक में हमने विभिन्न साहित्यिक विधाओं के साथ-साथ भारतीय पटसन निगम से जुड़े रचनात्मक प्रयासों को प्रस्तुत किया है। ये रचनाएँ न केवल हमारी संस्थान की उपलब्धियों और कार्यशैली को दर्शाती हैं, बल्कि हमारे कर्मचारियों की सृजनात्मकता और हिंदी भाषा के प्रति उनकी अभिरुचि को भी उजागर करती हैं। सरकारी संस्थानों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना एक महत्वपूर्ण कार्य है, और पटसन ज्योति इस दिशा में एक छोटा परंतु सार्थक प्रयास है।

वर्तमान अंक में आपको लेख, कविताएँ, लघु कथाएँ, और प्रेरणादायक विचारों का अद्भुत संग्रह मिलेगा, जो आपके मन-मस्तिष्क को नई ऊर्जा से भर देगा। साथ ही, इसमें हमारी संस्था द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग और विस्तार के लिए किए गए प्रयासों की झलक भी मिलेगी। हम सभी जानते हैं कि हिंदी भाषा केवल संचार का साधन नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, हमारे विचार और हमारे मूल्यों की संवाहक है। इसके समृद्ध और व्यापक प्रयोग से न केवल संस्थान की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को भी बल मिलता है।

इस पत्रिका को तैयार करने में हमारे समर्पित संपादकीय दल ने अथक प्रयास किए हैं। साथ ही, उन सभी रचनाकारों का हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से इस पत्रिका को समृद्ध किया है। हम आशा करते हैं कि पटसन ज्योति का यह अंक आपके लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और मनोरंजक साबित होगा। अंत में, मैं सभी पाठकों से निवेदन करता हूँ कि वे अपने विचारों, सुझावों और रचनाओं से हमें अवगत कराते रहें ताकि हम इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकें। आपके सहयोग और सहभागिता से ही यह प्रयास निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हो सकेगा।

स्नेहपूर्वक,

(रमेश कुमार)

न्यू मार्केट से न्यू टाउन

तारकेश्वर सिंह
प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

विगत कई वर्षों से हम सुन रहे थे कि न्यू टाउन में कोई पटसन भवन बन रहा है जहां हमारे निगम (जे.सी.आई.) के प्रधान कार्यालय का स्थानांतरण होना है। हम वर्तमान कार्यालय स्थल से खुश थे क्योंकि ये न्यू मार्केट बाज़ार के बीच में था और यातायात की अच्छी सुविधा थी। जबकि नया ऑफिस, मुख्य कोलकाता के दूसरे छोर पर स्थित था, जहां जाना-आना तो कठिन था ही, खाने-पीने की भी दिक्कत थी। मन-ही-मन हम यही चाहते थे कि नए ऑफिस में न जाना पड़े।

फिर हमें सुनने में आया कि पटसन भवन बन कर तैयार हो गया है, मेजें और कुर्सियां लग गई हैं, विद्युत तारें बिछ गई हैं। अब तो बस जाने की देरी है। फिर क्या था, एक दिन खबर आई कि पटसन भवन का उद्घाटन समारोह 06.01.2024 को होना है जिसमें हम सभी आमंत्रित थे। सुना तो बहुत था पर पटसन भवन को पहली बार उसी दिन देखा। काफ़ी सजावट हुई थी। जे.सी.आई. के साथ-साथ वस्त्र मंत्रालय, पटसन आयुक्त के कार्यालय और राष्ट्रीय पटसन बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारीगण पधारे थे। खाने-पीने का भी बंदोबस्त था। पटसन भवन देख कर तो अच्छा लगा लेकिन अपनी समस्याएँ तो थी ही। अपने-अपने बैठने की व्यवस्था हम उसी दिन देख लिये और कहीं न कहीं खुश भी हुए।

देखते ही देखते, स्थानांतरण का फ़रमान आ गया। 22.01.2024 से आधिकारिक कामकाज पटसन भवन से ही होना था। पता नहीं चला खुश हो या दुखी। वैसे भी अपने हाथ में कुछ नहीं था। स्थानांतरण की तैयारी 19.01.2024 और 20.01.2024 (शनिवार और रविवार) को होनी थी। प्रशासनिक विभाग की इसमें अहम् भूमिका थी।

फिर क्या था, हम सब जुट गए अपना-अपना दस्तावेज़, कागज़ और कंप्यूटर कसने में। आख़िरकार 22.01.2024 को सरकारी ड्यूटी हेतु पटसन भवन पहुँच ही गए। केंद्रीकृत ए.सी. देख कर थोड़ी जान में जान आई।

पटसन भवन कुल आठ मंजिल का है। तीसरी और चौथी मंजिल पर हमारा कार्यालय है, जबकि ऊपर के मंजिलों पर एन.जे.बी. और जे.सी. का कार्यालय है। पहली मंजिल पर सभागार है जिसमें लगभग 140 लोगों के बैठने का इंतजाम है। तीन लिफ्ट और दो सीढ़ियाँ हैं। D आकार के इस भवन में भूमिगत पार्किंग और बाहर में काफ़ी जगह है जहां समय-समय पर वृक्षारोपण एवं अन्य उत्सव होते रहते हैं। छत पर सोलर पैनल भी लगे हैं।

नए कार्यालय में आने के बाद से ही नये-नये तकनीक का प्रयोग किये जाने लगा है जिससे हमारा निगम आधुनिक तो बना ही है साथ ही साथ कामकाज भी आसान हुआ है। ई-ऑफिस में हम तेज गति से काम कर पा रहे हैं। इतना ही नहीं, हमारा निगम काम के साथ मनोरंजन में भी विश्वास रखता है। बैडमिंटन कोर्ट, टेबल टेनिस, शतरंज जैसे खेल को शामिल कर कामकाजी जीवन को बेहतर बनाया गया है। कैंटीन की व्यवस्था होने से खाने-पीने की दिक्कतें कम हुई है। लेकिन यातायात की परेशानी तो अब भी है। अब हम खुद को इस माहौल में ढाल चुके हैं और खुश भी हैं।

व्यक्तिगत जीवन में वित्तीय प्रबंधन

रमेश कुमार
मुख्य प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

वित्तीय प्रबंधन व्यक्तिगत जीवन की एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य प्रक्रिया है। यह न केवल आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करता है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता को भी सुधारता है। वित्तीय प्रबंधन का उद्देश्य केवल पैसे की बचत या खर्च पर नियंत्रण रखना नहीं है, बल्कि एक समग्र योजना बनाना है जो दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं।

वित्तीय प्रबंधन का महत्व : वित्तीय प्रबंधन का सबसे पहला और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह आपको आर्थिक नियंत्रण प्रदान करता है। जब आप अपने खर्चों और आय की योजना बनाते हैं, तो आप सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपकी आय आपकी आवश्यकताओं और लक्ष्यों के अनुरूप है। यह वित्तीय तनाव को कम करने और आपकी आर्थिक स्थिति को स्थिर करने में मदद करता है।

बजट बनाना प्रबंधन की नींव : वित्तीय प्रबंधन की नींव बजट बनाने से आरंभ होती है। बजट एक ऐसा उपकरण है जो आपकी आय और व्यय की योजना को व्यवस्थित करता है। एक अच्छे बजट में आपकी सभी आय के स्रोतों और खर्चों को शामिल किया जाता है। खर्चों को आवश्यकताओं (जैसे किराया, बिजली, भोजन) और इच्छाओं (जैसे मनोरंजन, यात्रा) में विभाजित करना महत्वपूर्ण है। नियमित रूप से बजट की समीक्षा और समायोजन से आप अपनी वित्तीय स्थिति को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं और अनावश्यक खर्चों से बच सकते हैं।

बचत आर्थिक सुरक्षा की कुंजी : बचत वित्तीय प्रबंधन का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। एक उचित बचत योजना आपको आकस्मिक स्थितियाँ, जैसे चिकित्सा, आपातकाल या नौकरी छूटने की स्थिति में आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है। एक आपातकालीन कोष स्थापित करना, जो आपकी 3 से 6 महीने की जीवन-यापन की लागत को कवर कर सके, अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, लंबी अवधि की वित्तीय लक्ष्यों के लिए भी बचत करना आवश्यक है, जैसे घर की खरीदारी या शिक्षा के लिए।

निवेश धन को बढ़ाना : बचत के साथ-साथ, निवेश भी व्यक्तिगत वित्तीय प्रबंधन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। निवेश से आपका धन समय के साथ बढ़ता है। विभिन्न निवेश विकल्पों में बैंक में सावधि जमा, शेयर, बांड, म्यूचुअल फंड्स और रियल एस्टेट शामिल हैं। निवेश करते समय, अपनी जोखिम सहनशीलता और समय की अवधि को ध्यान में रखना आवश्यक है। एक विविध निवेश पोर्टफोलियो जोखिम को कम करने और लाभ को अधिकतम करने में मदद करता है।

वित्तीय योजना भविष्य की तैयारी : वित्तीय योजना दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होती है। इसमें सेवानिवृत्ति योजना, कर योजना और संपदा प्रबंधन योजना शामिल हैं। सेवानिवृत्ति योजना से यह सुनिश्चित होता है कि आप अपने सेवानिवृत्ति के बाद आर्थिक रूप से सुरक्षित होंगे। कर योजना से आप अपने कर दायित्व को कम कर सकते हैं, जबकि संपदा प्रबंधन योजना से आपके संपत्ति का उचित वितरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

निष्कर्ष : अंतत: व्यक्तिगत वित्तीय प्रबंधन जीवन की गुणवत्ता और आर्थिक सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बजट बनाना, बचत करना, निवेश करना और वित्तीय योजना बनाना सभी आवश्यक कदम हैं जो आपके वित्तीय भविष्य को सुरक्षित और स्थिर बनाते हैं। नियमित रूप से अपनी वित्तीय स्थिति की समीक्षा और समायोजन से आप एक समृद्ध और तनाव मुक्त जीवन जी सकते हैं। वित्तीय प्रबंधन की इस प्रक्रिया को अपनाकर आप अपनी आर्थिक स्थिरता और व्यक्तिगत विकास को सुनिश्चित कर सकते हैं।

बिश्वजीत पाल
सहायक प्रबंधक (मा. सं.)
क्षेत्रीय कार्यालय-बरहमपुर

जूट हस्तशिल्प के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना

जूट शिल्प हस्तशिल्प का एक रूप है जिसमें जूट के रेशों का उपयोग किया जाता है, जो जूट के पौधे से प्राप्त होते हैं। इसमें प्राथमिक सामग्री के रूप में जूट का उपयोग करके विभिन्न सजावटी, कलात्मक और कार्यात्मक वस्तुएं जैसे बैग, दीवार पर लटकने वाले सामान, कोस्टर और यहां तक की गहने बनाना शामिल है।

हस्तशिल्प सदियों से मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। विशेष रूप से महिलाओं ने पारंपरिक ज्ञान और तकनीकों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाते हुए हस्तशिल्प उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज, हस्तशिल्प को उसके कलात्मक मूल्य, सांस्कृतिक महत्व और आर्थिक क्षमता के लिए नई सराहना मिली है।

जूट हस्तशिल्प में महिलाओं की भागीदारी ने न केवल सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया है बल्कि अद्वितीय और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के निर्माण में भी योगदान दिया है।

हालाँकि, जूट हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं के योगदान को अक्सर कम आंका गया है और उन्हें विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे सीमित बाजार पहुँच, कम वेतन और ख़राब कामकाजी परिस्थितियाँ इत्यादि ।

जूट हस्तशिल्प महिलाओं के लिए अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का एक तरीका रहा है और उसने महिलाओं को आर्थिक अवसर और उनके परिवार का समर्थन करने का साधन भी प्रदान किया है।

जूट हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं, उनके परिवारों और उनके समुदायों के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक लाभ पैदा करने की क्षमता है।

जो महिलाएं जूट हस्तशिल्प उद्योग में काम करती हैं, वे एक स्थिर आय अर्जित कर सकती हैं, जिससे उनके दैनिक जीवन की स्थिति में सुधार हो सकता है, उनके परिवारों का भरण-पोषण हो सकता है और उन्हें उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल में सहयोग हो सकता है।

जूट हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं की भागीदारी से उनकी सामाजिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह उनके उद्देश्य, स्वतंत्रता और आत्म - मूल्य की भावना प्रदान कर सकता है, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण में सुधार हो सकता है।

जूट हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, कई बाधाएँ अभी भी उन्हें पूरी तरह से भाग लेने से रोकती हैं। इन बाधाओं में संसाधनों, शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच की कमी, साथ ही लिंग आधारित भेदभाव और सांस्कृतिक रूढ़ियाँ शामिल हैं।

इन बाधाओं को दूर करने का उत्तम तरीका पहलों और कार्यक्रमों का आयोजन करना है जो विशेष रूप से हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं को केन्द्रित करते हैं।

उदाहरण के लिए, सूक्ष्म वित्त कार्यक्रम महिलाओं को अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन प्रदान कर सकते हैं जबकि प्रशिक्षण कार्यक्रम उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले हस्तशिल्प का उत्पादन करने के लिए आवश्यक कौशल सिखा सकते हैं।

जूट हस्तशिल्प उद्योग में अधिक महिलाओं को शामिल करने के कुछ तरीके हैं:

1 शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करना
2 बाज़ार तक पहुंच बनाना
3 लिंग आधारित भेदभाव का निवारण करना
4 वित्तीय सहायता प्रदान करना

5 महिला समूहों और सहकारी समितियों को बढ़ावा देना

इन बाधाओं पर काबू पाने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें सरकार, नागरिक समाज संगठन, निजी क्षेत्र और स्वयं महिलाएं शामिल हों।

एक साथ काम करके, हम एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत जूट हस्तशिल्प उद्योग बना सकते हैं जो महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता हासिल करने के लिए सशक्त बनाता है।

जूट हस्तशिल्प के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना लैंगिक समानता और सतत् विकास को बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली उपकरण है।

जूट हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं को अधिक सशक्त बनाकर, हम एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत दुनिया बना सकते हैं जहां हर किसी को अपने लक्ष्यों और सपनों को साकार करने का अवसर मिले।

उपभोक्ताओं के रूप में, हम महिलाओं द्वारा बनाए गए हस्तनिर्मित उत्पादों को खरीदकर और उनके पीछे की कहानियों के बारे में जानकर अपना समर्थन दिखा सकते हैं।

हम उन उपक्रम में भी शामिल हो सकते हैं जो महिलाओं को सशक्त बनाती हैं, जैसे स्थानीय महिला सहकारी समितियों में स्वयं सेवा करना या हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करने वाले संगठनों का समर्थन करना।

ऐसा करके, हम सीमांत महिलाओं के जीवन पर सार्थक प्रभाव डाल सकते हैं और अधिक न्यायसंगत और निरंतर दुनिया में योगदान दे सकते हैं।

जूट क्रांति: प्लास्टिक का एक संधारणीय विकल्प

मो० जीशान अली
कनिष्ठ निरीक्षक
बेचिमारी डीपीसी (गुवाहाटी)

जब दुनिया प्लास्टिक प्रदूषण के विनाशकारी परिणामों से जूझ रही है, तब संधारणीय विकल्पों की खोज करने का समय आ गया है। जूट उत्पाद एक व्यवहार्य समाधान के रूप में उभरे हैं, जो प्लास्टिक के बदले एक प्राकृतिक, बायोडिग्रेडेबल और नवीकरणीय विकल्प प्रदान करते हैं। जूट, एक तेजी से बढ़ने वाली फसल है, जिसका उपयोग सदियों से कपड़ा उत्पादन में किया जाता रहा है। हालाँकि, इसकी बहुमुखी प्रतिभा और स्थायित्व इसे पैकेजिंग से लेकर फैशन तक कई तरह के अनुप्रयोगों के लिए एक आदर्श सामग्री बनाता है। प्लास्टिक की तुलना में जूट उत्पादों के लाभ कई हैं। जूट बायोडिग्रेडेबल, गैर - विषाक्त और खाद बनाने योग्य है, जो पर्यावरण को नुकसान के जोखिम को कम करता है। इसके विपरीत, प्लास्टिक को विघटित होने में सैकड़ों साल लगते हैं, जिससे लैंडफिल और महासागर अवरुद्ध हो जाते हैं। जूट उत्पादों को उत्पादन और परिवहन के लिए कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिसके परिणामस्वरूप कम कार्बन पदचिह्न होता है। इसके अलावा, जूट संधारणीय कृषि का समर्थन करता है, मिट्टी के स्वास्थ्य और जैव विविधता को बढ़ावा देता है।

उदाहरण के लिए, जूट बैग प्लास्टिक बैग का एक लोकप्रिय विकल्प बन गए हैं। वे मजबूत, पुन: प्रयोज्य और स्टाइलिश हैं, जो उन्हें किराने की खरीदारी और अन्य दैनिक उपयोगों के लिए एक बढ़िया विकल्प बनाते हैं। जूट पैकेजिंग सामग्री, जैसे कि जूट रैप और बॉक्स, व्यवसायों और व्यक्तियों दोनों के लिए एक स्थायी समाधान प्रदान करते हैं। जूट वस्त्र और हस्तशिल्प फैशन और घर की सजावट के शौकीनों के लिए एक प्राकृतिक, पर्यावरण हितैषी विकल्प प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष में, जूट उत्पादों की ओर झुकाव प्लास्टिक मुक्त भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जूट को अपनाकर, हम प्लास्टिक कचरे को काफी हद तक कम कर सकते हैं, टिकाऊ कृषि का समर्थन कर सकते हैं और एक स्वस्थ पर्यावरण को बढ़ावा दे सकते हैं। जूट क्रांति में शामिल हों और प्लास्टिक के बजाय प्राकृतिक, बायोडिग्रेडेबल और नवीकरणीय जूट उत्पादों को चुनने का सचेत विकल्प चुनें।

कार्यालय और हम

नीरज कुमार
लेखाकार
क्षेत्रीय कार्यालय - गुवाहाटी

हम अपने कार्यकुशलता के साथ किसी कंपनी / संगठन के साथ जुड़ते हैं जहां हमें प्रशिक्षण देकर संगठन के कार्यशैली के अनुरूप बनाया जाता है। हम और हमारा कार्यालय एक दूसरे के पूरक होते हैं। एक तरफ जहां हमारी अपेक्षा अपने दैनिक जीवन की आजीविका और पारिवारिक जिम्मेदारी के निर्वाह करने से है, वही कंपनी / संगठन की हमसे अपेक्षाएँ अनुशासित, संगठित व संयमित होकर समाज और राष्ट्रहित में कार्य करने की होती है। "भारतीय पटसन निगम लिमिटेड" का मुख्य कार्य है - न्यूनतम समर्थन मूल्य द्वारा किसानों को उसकी फसल (पटसन) का उचित मूल्य प्रदान करना। इसके अलावा एक कर्मचारी के रूप में मुझे विभिन्न विभाग द्वारा आयोजित कई गतिविधियों से कुछ ना कुछ सीखने और भाग लेने का सौभाग्य मिला। इसमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-

स्वच्छता पखवाड़ा : महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया। इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार के सभी मंत्रालय, पीएसयू, राज्य सरकारें और स्थानीय निकाय द्वारा विभिन्न स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अभियान का हमारे दैनिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। स्वच्छ पर्यावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्ताव को दिसंबर 2014 में पारित कर आधिकारिक तौर पर 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित कर दिया। 21 जून, 2024 को "स्वयं और समाज के लिए योग" थीम के साथ 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में भारत सरकार योग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने के लिए एक विशेष अवसर प्रदान कर रही है। योग द्वारा हम अपना शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं। साथ ही साथ अपने आस-पास रहने वाले लोग को भी योग के प्रति जागरूक कर सकते हैं।

हिंदी पखवाड़ा : भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अन्तर्गत देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। भारत सरकार इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। राजभाषा विभाग द्वारा भारत सरकार के सभी कार्यालयों, उपक्रमों, उद्यमों, संस्थाओं में हिंदी पखवाड़ा हर वर्ष 14 सितंबर से 28 सितंबर तक मनाया जाता है। इसके फलस्वरूप कार्यालय के कर्मचारियों और अधिकारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि बढ़ रही है।

जूट विविधीकृत उत्पाद के प्रति जागरूकता : जूट उत्पाद विविधीकरण योजना को वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक सांविधिक निकाय राष्ट्रीय जूट बोर्ड के माध्यम से क्रियान्वित किया जाता है। भारतीय पटसन निगम ने देश भर में जूट विविध उत्पाद की बिक्री के लिए अपना ईकॉमर्स वेबसाइट लॉन्च कर अपना कृतिमान स्थापित किया है। जिसका लक्ष्य देश भर में बायोड्यूरेबल उत्पाद के रूप में जूट विविधीकृत उत्पाद अपनाना है। हम आम जनमानस को जागरूक करने के लिए केंद्रीय/राज्य सरकार या गैर सरकारी संस्थान द्वारा आयोजित समारोह में स्टॉल, नुक्कड़ नाटक, प्रदर्शनी और अन्य जागरूकता कार्यक्रम द्वारा लोगों को प्लास्टिक छोड़कर जूट उत्पाद को अपनाने का अपील करते हैं।

जूट जियोटेक्सटाइल : जूट जियोटेक्सटाइल सबसे महत्वपूर्ण विविधीकृत जूट उत्पादों में से एक है। इसे सिविल इंजीनियरिंग, मृदा अपरदन नियंत्रण, सड़क, फुटपाथ निर्माण और नदी तटों की

सुरक्षा जैसे कई क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है।

कर्मयोगी भारत : "भारतीय पटसन निगम लिमिटेड" द्वारा आयोजित विशेष प्रशिक्षण मिशन कर्मयोगी के तहत कर्मचारियों और अधिकारियों के क्षमता निर्माण भूमिका-आधारित प्रशिक्षण के माध्यम से व्यक्तियों के दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान को बढ़ाने पर केंद्रित है। इसके द्वारा कई महत्वपूर्ण विषय पर हमें प्रशिक्षण दिया गया जो हमारे दैनिक जीवन के साथ-साथ संगठनात्मक लक्ष्यों और कैरियर के लक्ष्यों को बेहतर बनाएगा।

क्षेत्रीय कार्यालय : उपरोक्त बिन्दुओं के अलावा क्षेत्रीय कार्यालय, प्रधान कार्यालय और स्थानीय हितधारकों के बीच प्रभावी समन्वय प्रदान करते हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों में सभी कर्मचारी और अधिकारी के बीच एक अच्छा समन्वय हैं, जिससे कार्यालय में कार्य करना अति सुगम और सरल हो जाता है।

यहां किसानों के साथ-साथ भौगोलिक दृष्टि से जल, जीवन और हरियाली का भी विशेष ख्याल रखा जाता है। हमें अपना बेहतर भविष्य बनाने के लिए आज ही प्लास्टिक छोड़ कर जूट विविधीकृत उत्पाद जैसे थैला, बोतल बैग, लैपटॉप बैग, लेडिस पर्स, बोरा-चट्टी, चटाई, फाइल फ़ोल्डर, गुलदस्ता आदि अनेक ऐसे आकर्षक उत्पाद हैं जिसे अपना कर वातावरण को स्वच्छ और प्रदूषण रहित रखने में हम अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

ईश्वर का निर्णय

कमल कान्त शर्मा
लेखाकार
क्षेत्रीय कार्यालय-सिलीगुड़ी

एक राजा अपने मंत्री के साथ आखेट पर निकले। वन में हिरन को देख राजा ने तीर प्रत्यंचा पर चढ़ाया ही था कि जंगल में से एक सूअर निकला और राजा को धक्का देकर भागा। इस अप्रत्याशित आघात के कारण तीर की नोक से उनकी उंगली कट गई। रक्त बहने लगा और राजा व्याकुल हो उठे।

राजा की उंगली से खून बहता देखकर मंत्री बोले- 'राजन्! भगवान जो करता है, अच्छे के लिए करता है। राजा काफ़ी पीड़ा में थे। मंत्री की बात सुनकर क्रोध से भर उठे। उन्होंने मंत्री को आज्ञा दी कि वो उसी समय उनका साथ छोड़ अन्य राह पकड़ लें। मंत्री ने आदेश को सहर्ष स्वीकार किया और भिन्न दिशा में निकल पड़े।

इधर राजा थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि उन्हें जंगल में नरभक्षी कबीले के लोगों ने घेर लिया। वे उन्हें पकड़कर अपने सरदार के पास ले चले। राजा को बलि देने की तैयारी हो ही रही थी कि कबीले के पुजारी ने राजा की कटी उंगली देखकर कहा कि "इसका तो अंग भंग है, इसकी बलि स्वीकार नहीं हो सकती। "

राजा को जीवनदान मिला तो उन्हें तुरंत मंत्री की याद आई। सोचने लगे कि मंत्री ठीक कहते थे : -

भगवान जो करता है, अच्छे के लिए ही करता है। मुझे उनका साथ नहीं छोड़ना चाहिए था ऐसा सोचते वे आगे बढ़ रहे थे कि उन्हें मंत्री नदी किनारे भजन करते दिखाई पड़े। राजा ने प्रेमपूर्वक मंत्री को गले लगाया और उन्हें सारा घटनाक्रम कह सुनाया। इसके बाद राजा ने उनसे प्रश्न किया- "मेरी उंगली कटी, इसमें भगवान ने मेरा भला किया, पर तुम्हें मैंने अपमानित करके भगाया, इससे तुम्हारा क्या भला हुआ?"

मंत्री मुस्कराए और बोले - "राजन् ! यदि आपने मुझे भिन्न राह पर न भेजा होता और मैं आपके साथ होता तो अंग भंग के कारण नरभक्षी आपकी बलि न देते, पर मेरी बलि चढ़नी सुनिश्चित थी। इसलिए भगवान जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं।"

शिक्षा : हर कार्य के पीछे कोई न कोई भलाई छिपी होती है, हमें धैर्यपूर्वक ईश्वर के निर्णय पर विश्वास करते हुए अपने कर्म करते रहना चाहिए।

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।" - बालकृष्ण शर्मा नवीन।

शांतनू चक्रवर्ती
उप महाप्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

पूंजी बजटिंग

पूंजी बजटिंग (Capital Budgeting) : वह प्रक्रिया है जिसका उपयोग कंपनियाँ लंबी अवधि के निवेश, निर्णयों के मूल्यांकन और चयन के लिए करती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य यह तय करना होता है कि कौन से परियोजनाओं या संपत्तियों में निवेश करना कंपनी के लिए लाभकारी होगा और क्या यह निवेश उसकी वित्तीय स्थिति और दीर्घकालिक रणनीतियों के अनुरूप है।

पूंजी बजटिंग की प्रक्रिया में आमतौर पर निम्नलिखित चरण शामिल होते हैं:

1. परियोजनाओं की पहचान (Identification of Projects): सबसे पहले, विभिन्न संभावित परियोजनाओं की पहचान की जाती है, जो कंपनी की विकास रणनीति और लक्ष्यों के अनुरूप होती हैं।

2. वित्तीय विश्लेषण (Financial Analysis): चयनित परियोजनाओं की लागत और अपेक्षित लाभ का विश्लेषण किया जाता है। इसमें परियोजना की कुल लागत, अपेक्षित नकदी प्रवाह और संभावित लाभ का आकलन शामिल होता है।

3. निवेश मानदंडों का मूल्यांकन (Evaluation of Investment Criteria): विभिन्न निवेश मानदंडों का उपयोग करके परियोजनाओं का मूल्यांकन किया जाता है। प्रमुख मानदंडों में शामिल हैं: -

- निवेश पर लाभ (ROI): यह दर्शाता है कि निवेश पर कितनी लाभ प्राप्त होगा।
- नेट प्रेजेंट वैल्यू (NPV): यह वर्तमान मूल्य में अपेक्षित नकदी प्रवाह और परियोजना की लागत के बीच का अंतर है।
- आंतरिक लाभांश दर (IRR): यह वह दर है जिस पर परियोजना की नेट प्रेजेंट वैल्यू शून्य होती है।
- पे बैक पीरियड: यह वह समय अवधि है जिसमें निवेश की लागत पूरी हो जाती है।

4. निर्णय लेना (Decision Making): वित्तीय विश्लेषण और मानदंडों के आधार पर निर्णय लिया जाता है कि कौन-सी परियोजनाओं में निवेश करना कंपनी के लिए फायदेमंद रहेगा।

5. परियोजना का कार्यान्वयन और निगरानी (Implementation and Monitoring): चयनित परियोजनाओं को लागू किया जाता है और उनकी प्रगति की निगरानी की जाती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे अपेक्षित परिणाम प्रदान कर रही हैं।

पूंजी बजटिंग की सही तरीके से योजना और कार्यान्वयन से कंपनियाँ अपनी पूंजी का सर्वोत्तम उपयोग कर सकती हैं और दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित कर सकती हैं।

महिला सशक्तिकरण

रवि कुमार
कनिष्ठ निरीक्षक
नगरुखरा उप केंद्र, कृष्णनगर

आज के आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि ग्रंथों में नारी के महत्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवताः ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।।

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ नारी की पूजा नहीं होती, उनका सम्मान नहीं होता, वहाँ किए गए समस्त अच्छे कर्म भी निष्फल हो जाते हैं।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।

न शोचुन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ।।

अर्थात् जिस कूल में स्त्रियाँ कष्ठ भोगती हैं, वह कूल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और जहाँ स्त्रियाँ प्रसन्न रहती है वह कूल सदैव फलता-फूलता और समृद्ध रहता है।

लेकिन विडम्बना तो देखिये नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उसके सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसलों, आय, संपत्ति और दूसरी वस्तुओं की उपलब्धता से है, इन सुविधाओं को पाकर भी वह अपने सामाजिक स्तर को ऊँचा कर सकती है।

अपने देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है। नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आयेगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें इस क़ाबिल बनाया जाएगा कि वो हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसले कर सकें।

कोमल है, कमजोर नहीं तू ।

शक्ति का नाम ही नारी है ।।

जग को जीवन देने वाली ।

मौत भी तुझसे हारी है ।।

महिला सशक्तिकरण से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है। सशक्तिकरण की प्रक्रिया में समाज को पारंपरिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जाता है, जिसने महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है। वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलनों और यूएनडीपी आदि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने महिलाओं के सामाजिक समता, स्वतंत्रता और न्याय के अधिकारों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। महिला सशक्तिकरण, भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक, सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएँ शक्तिशाली बनती है जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है। इसमें ऐसी ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सकती है।

भारत की आधी आबादी महिलाओं की है और विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार अगर महिला श्रम में योगदान दे तो भारत की

विकास दर दहाई की संख्या में होगी। फिर भी यह दुर्भाग्य की बात है कि सिर्फ कुछ लोग महिला रोजगार के बारे में बात करते हैं जबकि अधिकतर लोगों को युवाओं के बेरोजगार होने की ज़्यादा चिंता है। हाल ही में प्रधानमंत्री की 'आर्थिक सलाहकार परिषद' की पहली बैठक में 10 ऐसे प्रमुख क्षेत्रों को चिह्नित किया गया जहां ज़्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

नेशनल सैंपल सर्वे (68वां राउंड) के अनुसार 2011-12 में महिला सहभागिता दर 25.51 प्रतिशत थी जो कि ग्रामीण क्षेत्र में 24.8 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र में मात्र 14.7 प्रतिशत थी। जब रोजगार की कमी है तो आप महिलाओं के लिए पुरुषों के समान कार्य अवसरों की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? एक पुरुष ज़्यादा समय तक काम कर सकता है, उसे मातृत्व अवकाश की जरूरत नहीं होती है और कहीं भी यात्रा करना उसके लिए आसान होता है।

ऐसे कई कारण हैं जिनसे भारत की महिला श्रमिक सहभागिता में पिछले कुछ वर्षों में गिरावट आई है और यह दर दक्षिण एशिया में पाकिस्तान के बाद सबसे कम है। नेपाल, भूटान और बांग्लादेश में जनसंख्या के अनुपात के अनुसार महिला रोजगार ज़्यादा है। इन क्षेत्रों के पुरुष काम करने के लिए भारत आते हैं और उनके पीछे महिलाएँ अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए खेतों में काम करती है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में महिलाएं मात्र 17 प्रतिशत का योगदान दे रही है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार क्रिसटीन लगार्डे का कहना है कि ज़्यादा से ज़्यादा महिलाएँ अगर श्रम में भागीदारी करे तो भारत की GDP 27 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

शिक्षा सशक्तिकरण : शिक्षा सशक्तिकरण का उद्देश्य लड़कियों और महिलाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच प्रदान करना है। इसमें शिक्षा में लैंगिक असमानताओं को खत्म करने, लड़कियों के नामांकन और प्रतिधारण को बढ़ावा देने और महिलाओं को आजीवन सीखने के अवसर प्रदान करने की पहल शामिल है। शिक्षा सशक्तिकरण महिलाओं को ज्ञान, कौशल और आलोचनात्मक सोच क्षमताओं से लैस करता है, जिससे वे रूढ़िवादिता को चुनौती दे पाती हैं, अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर पाती हैं और अपने व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में योगदान दे पाती हैं।

कानूनी सशक्तिकरण : कानूनी सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं की न्याय तक पहुँच और कानून के तहत उनके अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इसमें लिंग-संवेदनशील कानूनी ढाँचे को बढ़ावा देने, भेदभावपूर्ण कानूनों और प्रथाओं को संबोधित करने और महिलाओं के लिए कानूनी सहायता और सेवाएँ प्रदान करने की पहल शामिल है। कानूनी सशक्तिकरण महिलाओं को अपने अधिकारों का दावा करने, लिंग-आधारित भेदभाव और हिंसा के लिए निवारण की मांग करने और कानूनी प्रणालियों को प्रभावी ढंग से संचालित करने में सक्षम बनाता है।

महिला सशक्तिकरण के लिए दिए गए अधिकार : समान वेतन का अधिकार – समान पारिश्रमिक अधिनियम के अनुसार अगर बात वेतन या मजदूरी की हो तो लिंग के आधार पर किसी के साथ भी भेदभाव नहीं किया जा सकता।

कार्य-स्थल में उत्पीड़न के खिलाफ कानून : यौन उत्पीड़न अधिनियम के तहत आपके वर्किंग प्लेस पर हुए यौन उत्पीड़न के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने का पूरा हक है। केन्द्र सरकार ने भी महिला कर्मचारियों के लिए नए नियम लागू किए हैं, जिसके तहत वर्किंग प्लेस पर यौन शोषण के शिकायत दर्ज होने पर महिलाओं को जांच लंबित रहने तक 90 दिन का पैड लीव दी जाएगी।

कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार : भारत के हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह एक महिला को उसके मूल अधिकार 'जीने के अधिकार' का अनुभव करने दें। गर्भाधान और प्रसव से पूर्व पहचान करने की तकनीक लिंग चयन पर रोक अधिनियम (PCPNDT) कन्या भ्रुण हत्या के खिलाफ अधिकार देता है।

गरिमा और शालीनता के लिए अधिकार : किसी मामले में अगर आरोपी एक महिला है तो उस पर की जाने वाली कोई भी चिकित्सा जांच प्रक्रिया किसी महिला द्वारा या किसी दूसरी महिला की उपस्थिति में ही की जानी चाहिए।

महिला सशक्तिकरण : महिलाओं का पारिवारिक बंधनों से मुक्त होकर अपने और अपने देश के बारे में सोचने की क्षमता का विकास होना ही महिला सशक्तिकरण कहलाता है।

महिला श्रेष्ठता : समाज में महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। क्योंकि आज के समय में महिला हर क्षेत्र में आगे है, चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर खेल के क्षेत्र।

महिला सशक्तिकरण का महत्व : सामुदायिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है।

आर्थिक विकास : महिलाओं का सशक्तिकरण समुदायों के भीतर आर्थिक विकास और समृद्धि में योगदान देता है। जब महिलाओं को शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और आर्थिक अवसरों तक पहुँच

मिलती है, तो वे कार्य बल में भाग ले सकती हैं, व्यवसाय शुरू कर सकती हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान दे सकती हैं। सशक्त महिलाएँ नवाचार, उत्पादकता उद्यमशीलता को बढ़ावा देती हैं, जिससे आर्थिक विकास और गरीबी में कमी आती है।

सामाजिक प्रगति : महिला सशक्तिकरण सामाजिक मानंदडों, दृष्टिकोणों और प्रथाओं को चुनौती देकर और बदलकर सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देता है। जब महिलाओं को सशक्त बनाया जाता है, तो वे एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज बनाने में सक्रिय रूप से योगदान दे सकती हैं जहाँ सभी के अधिकारों का सम्मान किया जाता है।

नेतृत्व और शासन : समुदाय के भीतर नेतृत्व और निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में भाग लेने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना बेहतर शासन और प्रतिनिधित्व की ओर ले जाता है। जब महिला सामुदायिक नेताओं को अपने दृष्टिकोण, ज्ञान और कौशल का योगदान करने के समान अवसर मिलते हैं, तो सामुदायिक निर्णय अधिक समावेशी और विविध आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं। स्थानीय शासन में महिला सामुदायिक नेता के रूप में महिलाओं की भागीदारी, जवाबदेही, पारदर्शीता और प्रभावी सामुदायिक विकास रणनीतियों को बढ़ावा देती है।

लंबे समय से समाज के अधिकांश पुरुष महिलाओं के विकास हेतु अपना शत-प्रतिशत योगदान दे रहे हैं। वे महिलाओं के लिए एक ऐसा स्वच्छंद माहौल दे रहे हैं जिससे महिलाएँ अपने पंखों को खोल सकें और ऊँची उड़ान भर सकें।

संदीपा सेन दत्ता
मुख्य प्रबन्धक (मा० सं०)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

राष्ट्रीय खेल दिवस

खेल समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्तियों को शारीरिक और मानसिक लाभ प्रदान करते हैं और समग्र रूप से समाज को प्रभावित करते हैं। खेल लोगों को एकजुट करने और आपसी समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह समस्या-समाधान और निर्णय लेने के कौशल में सुधार करता है। रणनीतिक सोच और योजना का विकास, बेहतर समय प्रबंधन और संगठन खेल के कुछ दूरगामी लाभ हैं।

भारत सरकार हर साल 29 अगस्त को महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन को चिह्नित करने के लिए राष्ट्रीय खेल दिवस मनाती है। इस दिन का उद्देश्य देश भर में खेल और शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देना है, खासकर युवाओं के बीच। सरकार के निर्देश के अनुसार, जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने एक सप्ताह की खेल गतिविधि का आयोजन किया है। खेल सप्ताह की शुरुआत 29 अगस्त 2024 को निगम के कर्मचारियों द्वारा ली गई फिट इंडिया प्रतिज्ञा के साथ हुई। पूरे सप्ताह बैडमिंटन, शतरंज, प्लैंक चैलेंज और टेबल टेनिस जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी कार्यक्रमों में कर्मचारियों ने पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। सप्ताह के अंत में, निगम के प्रबंध निदेशक द्वारा विजेताओं को पदक वितरित किए गए और सभी प्रतिभागियों को भागीदारी के प्रमाण पत्र वितरित करने के साथ उत्सव का समापन हुआ। कुल मिलाकर, खेलों में भाग लेने से कई प्रकार के लाभ हो सकते हैं जो खेल के मैदान से परे जाकर जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव डालते हैं।

उत्तर पूर्वी राज्यों में हस्तशिल्प और हस्तकरघा की उपलब्धियाँ और विकास

अनिक कुमार दे
आंचलिक प्रबंधक -उत्तर पूर्व
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

उत्तर पूर्वी भारत, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और परंपरागत कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ के हस्तशिल्प और हस्तकरघा न केवल इस क्षेत्र की पहचान हैं, बल्कि यह यहाँ के लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन भी हैं। विगत कुछ वर्षों में, उत्तर पूर्वी राज्यों के हस्तशिल्प और हस्तकरघा उद्योगों ने अद्वितीय प्रगति की है और कई नई ऊंचाइयाँ हासिल की हैं।

मुख्य उपलब्धियाँ और विकास:

1. वैश्विक मंच पर पहचान: उत्तर पूर्वी राज्यों के हस्तशिल्प और हस्तकरघा उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शित किया गया है। विभिन्न हस्तशिल्प मेलों, प्रदर्शनी और फैशन शो में इन उत्पादों ने अपनी विशिष्टता और सुंदरता से सभी का ध्यान आकर्षित किया है। इससे न केवल इन उत्पादों की मांग बढ़ी है, बल्कि इन्हें वैश्विक बाजार में भी पहचान मिली है।

2. कारीगरों का सशक्तिकरण: इस क्षेत्र के कारीगरों को सरकार और अन्य संस्थानों द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जा रहा है। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से कारीगरों को नई तकनीकों और डिजाइनों की जानकारी दी जा रही है, जिससे उनके उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है और उनकी आय में भी वृद्धि हो रही है। साथ ही, कारीगरों को उनके अधिकारों और सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी कदम उठाए गए हैं।

3. नए डिज़ाइनों और उत्पादों का विकास: उत्तर पूर्वी राज्यों के कारीगरों ने अपनी पारंपरिक कला को आधुनिकता के साथ जोड़ते हुए नए डिज़ाइनों और उत्पादों का विकास किया है। चाहे वह बांस और बेंत से बने उत्पाद हों, या फिर पारंपरिक वस्त्र और गहने—हर एक में आधुनिकता और परंपरा का अनूठा संगम देखने को मिलता है। इससे इन उत्पादों की मांग देश-विदेश में और अधिक बढ़ी है।

4. ई-कॉमर्स के माध्यम से विपणन: डिजिटल युग में कदम रखते हुए, उत्तर पूर्वी राज्यों के हस्तशिल्प और हस्तकरघा उत्पादों को ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर भी लाया गया है। Amazon, Flipkart और अन्य ई-कॉमर्स वेबसाइटों के माध्यम से इन उत्पादों को वैश्विक बाजार में पहुँचाया जा रहा है। इससे न केवल इन उत्पादों की बिक्री में वृद्धि हुई है, बल्कि कारीगरों को भी सीधा लाभ हो रहा है।

5. संरक्षण और संवर्धन: सरकार और गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से, उत्तर पूर्वी राज्यों की पारंपरिक कला और शिल्प के संरक्षण के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के तहत विलुप्त होती शिल्प विधाओं को पुनर्जीवित करने और उनके संवर्धन के प्रयास किए जा रहे हैं।

6. सामाजिक और आर्थिक सुधार: हस्तशिल्प और हस्तकरघा उद्योग ने इस क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन उद्योगों के माध्यम से स्थानीय समुदायों, विशेषकर महिलाओं और पिछड़े वर्गों को रोजगार के अवसर मिल रहे हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है।

निष्कर्ष: उत्तर पूर्वी राज्यों के हस्तशिल्प और हस्तकरघा उद्योगों ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी पहचान को नए आयाम दिए हैं। इनकी उत्कृष्टता और विशिष्टता ने न केवल इन राज्यों की सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखा है, बल्कि इसे नई पीढ़ी के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनाया है। आने वाले समय में, इन उद्योगों के और भी विकास की संभावनाएँ हैं, जिससे यह क्षेत्र आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से और अधिक सशक्त बनेगा।

लद्दाख : भारत का बर्फीला रेगिस्तानी स्वर्ग

उदय चौरसिया
मामा - रवि चौरसिया
उप प्रबंधक (मानव संसाधन)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

लद्दाख, जिसे 'छोटा तिब्बत' भी कहा जाता है, भारत के जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश का एक प्रमुख हिस्सा है। यह क्षेत्र अपनी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति, समृद्ध संस्कृति और अप्रतिम प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। हिमालय की गोद में बसा यह क्षेत्र अपनी बर्फीली पहाड़ियों, गहरे नीले आकाश और विशाल रेगिस्तानी परिदृश्यों के लिए जाना जाता है।

भूगोल और जलवायु : लद्दाख का भूगोल विविध और अद्वितीय है। यहाँ ऊँची बर्फीली पहाड़ियाँ, गहरे घाटियाँ और शुष्क रेगिस्तान मिलते हैं। इस क्षेत्र की औसत ऊँचाई 9,000 से 25,000 फीट के बीच है। लद्दाख की जलवायु अत्यंत कठोर है, जहाँ सर्दियों में तापमान -30 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है, जबकि गर्मियों में तापमान 20 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच सकता है। यहाँ की जलवायु और भूगोल ने यहाँ के जीवन को विशेष रूप से कठिन और चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

संस्कृति और जनजातियाँ : लद्दाख की संस्कृति तिब्बती संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित है। यहाँ के निवासी मुख्य रूप से बौद्ध धर्म का पालन करते हैं और इस क्षेत्र में कई प्राचीन मठ और स्तूप स्थित हैं। लेह और कारगिल, लद्दाख के दो प्रमुख जिलें हैं, जहाँ लद्दाखी, बाल्टी और द्रास जैसे समुदाय निवास करते हैं। यहाँ की प्रमुख भाषा लद्दाखी, उर्दू और हिंदी है, जबकि बौद्ध धर्म और इस्लाम यहाँ के प्रमुख धर्म हैं।

लद्दाख के लोग अपनी पारंपरिक पोशाक, खान-पान और त्योहारों के लिए प्रसिद्ध हैं। हेमिस, लॉसार और लद्दाख फैस्टिवल यहाँ के प्रमुख त्योहार हैं, जिन्हें धूमधाम से मनाया जाता है। यहाँ के त्योहार रंगीन पोशाकों, पारंपरिक नृत्यों और धार्मिक अनुष्ठानों से भरपूर होते हैं, जो लद्दाख की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पर्यटन : लद्दाख का पर्यटन वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। यहाँ के प्राकृतिक दृश्य, शांत मठ और रोमांचक ट्रेकिंग रूट पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पैंगोंग झील, नुब्रा घाटी और जंस्कार घाटी जैसे स्थान लद्दाख के प्रमुख आकर्षण हैं। लेह शहर में स्थित शांति स्तूप, लेह पैलेस और हेमिस मठ भी पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हैं।

लद्दाख का पर्यटन केवल प्राकृतिक सुंदरता तक ही सीमित नहीं है; यह रोमांचक गतिविधियों का भी केंद्र है। यहाँ ट्रेकिंग, माउंटेन बाइकिंग और रिवर राफ्टिंग जैसी गतिविधियों का लुत्फ उठाया जा सकता है। विशेष रूप से खारदुंग ला, जो दुनिया की सबसे ऊँची मोटर योग्य सड़क है, मोटरबाइक प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है।

वन्यजीवन और संरक्षण : लद्दाख का वन्य जीवन भी उतना ही विविध और विशिष्ट है। यहाँ हिमालयी तेंदुआ, तिब्बती भेड़िया और कियांग जैसे दुर्लभ जीव-जंतु पाए जाते हैं। लद्दाख की प्राकृतिक विविधता को संरक्षित करने के लिए यहाँ कई संरक्षित क्षेत्र और वन्यजीव अभयारण्य स्थापित किए गए हैं। हालांकि, यहाँ का पारिस्थितिक तंत्र अत्यंत नाजुक है और इसे मानव हस्तक्षेप और जलवायु परिवर्तन से खतरा है।

आधुनिक विकास और चुनौतियाँ : हाल के वर्षों में, लद्दाख ने बुनियादी ढांचे और पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। सड़कों, हवाई अड्डों और दूरसंचार सेवाओं का विस्तार यहाँ के विकास में सहायक रहा है। हालांकि, यह क्षेत्र अब भी अपनी भौगोलिक कठिनाइयों और कठोर जलवायु के कारण कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसके अलावा, यहाँ के परिस्थितिकी को बनाए रखने और पर्यटन के दबाव को संतुलित करने के लिए सतर्कता की आवश्यकता है।

निष्कर्ष : लद्दाख एक ऐसा क्षेत्र है जो अपनी अद्वितीय भौगोलिक विशेषताओं, समृद्ध संस्कृति और शांतिपूर्ण वातावरण के लिए जाना जाता है। यह स्थान न केवल प्रकृति प्रेमियों के लिए बल्कि साहसिक गतिविधियों के शौकीनों और सांस्कृतिक अनुभवों के लिए भी एक आदर्श स्थल है। हमें लद्दाख की इस अद्वितीय धरोहर को संरक्षित करने के लिए सामूहिक प्रयास करने चाहिए, ताकि यह प्राकृतिक स्वर्ग आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहे।

कम से कम एक बार अपने परिवार और दोस्तों के साथ घूमने जरूर जाएँ।

नकदी रहित भारत

योगेन्द्र कुमार शर्मा
लेखाकार
पार्वतीपुरम आर.एल.डी, आंध्र प्रदेश

नकदी रहित भारत की संकल्पना अभी हाल ही में प्रकाश में आई है और इसका श्रेय सही मायनों में केंद्र सरकार द्वारा किए गए 500 रुपये और 1000 रुपये की मुद्रा के विमुद्रीकरण को जाता है। शरू-शुरू में तो लोगों को पुरानी मुद्रा को नई मुद्रा से बदलने एवं अपने ही खातों से पैसे निकालने में काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और यही वजह है कि सरकार के इस कदम की घोर आलोचना भी हुई।

सरकार के आलोचकों के अनुसार, बिना किसी पर्याप्त व्यवस्था के इतना बड़ा कदम अचानक उठाना ठीक नहीं था। उनके अनुसार ऐसा कदम उठाने से पहले ही सारे इंतजाम कर लेने चाहिए थे। आलोचकों का कहना है कि भारत में ऑनलाइन लेन-देन कतई सुरक्षित नहीं है और ऑनलाइन माध्यम से धोखाधड़ी की घटनाएँ आम हैं और इसलिए पर्याप्त सुरक्षा उपायों को अपनाए जाने की आवश्यकता है। आलोचकों ने इस पूरे प्रकरण की बेहद डरावनी तस्वीर पेश की और यह तर्क भी दिया कि बाजार में आवश्यक नकदी प्रवाह की अनुपलब्धता के कारण, कई लोगों की मौत हो गई और कई लोगों की नौकरी चली गई।

हालांकि सभी पुराने 500 रुपये और 1,000 रुपये की मुद्रा के विमुद्रीकरण के बाद देश में डिजिटल माध्यम द्वारा नकद लेन-देन में भारी उछाल देखा गया है। क्रेडिट / डेबिट कार्डों, मोबाइल फोन अनुप्रयोगों, एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई), भीम (भारत इंटरफेस फॉर मनी) एप, आधार सक्षम भुगतान प्रणाली (एईपीएस) या ई-पर्स के तहत विभिन्न अनुप्रयोगों के द्वारा नकदी रहित भारत (कैशलेस भारत) के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अपेक्षित प्रगति दर्ज की गई है।

भारत जैसे विशाल देश में जहां एक बड़ी जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन बिताने को मजबूर है, नकदी रहित अर्थव्यवस्था (कैशलेश इकॉनमी) लागू करने में कठिनाईयां आना तो स्वाभाविक है लेकिन इस दिशा में प्रयास शुरू करना जरूरी था। आज डिजिटल माध्यम से मौद्रिक लेन-देन के प्रति लोगों के मानसिकता में एक बड़ा परिवर्तन आया है। लोग जान गए हैं कि डिजिटल माध्यम भी सुरक्षित, आसान, सुविधाजनक एवं पारदर्शी है और नकदी रहित भारत में काले धन या नकली मुद्रा की अब कोई गुंजाइश नहीं है।

कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी

अभिक साहा
कंपनी सचिव
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी किसे कहते हैं और भारत में इस पर कितना खर्च होता है?

कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी का सीधा मतलब कंपनियों को उनकी सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में बताना है। भारत में कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी (CSR) के नियम अप्रैल 1, 2014 से लागू हैं। इसके अनुसार, जिन कम्पनियाँ की सालाना नेटवर्क 500 करोड़ रुपये या सालाना आय 1000 करोड़ रु० की या सालाना लाभ 5 करोड़ रु० का हो तो उनको CSR पर खर्च करना जरूरी होता है। यह खर्च तीन साल के औसत लाभ का कम से कम 2% होना चाहिए।

कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी क्या है (Corporate Social Responsibility Meaning):-

जैसा कि हमें पता है कि कम्पनियाँ किसी उत्पाद को बनाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करती हैं, प्रदूषण को बढ़ावा देती हैं और अपनी जेबें भरती हैं; लेकिन इस ख़राब प्रदूषण का नुकसान समाज में रहने वाले विभिन्न लोगों को उठाना पड़ता है; क्योंकि इन कंपनियों की उत्पादक गतिविधियों के कारण ही उन्हें प्रदूषित हवा और पानी का उपयोग करना पड़ता है लेकिन इन प्रभावित लोगों को कंपनियों की तरफ से किसी भी तरह का सीधे तौर पर मुआवजा नहीं दिया जाता है। इस कारण ही भारत सहित पूरे विश्व में कंपनियों के लिए यह अनिवार्य बना दिया गया कि वे अपनी आमदनी का कुछ भाग उन लोगों के कल्याण पर भी खर्च करें जिनके कारण उन्हें असुविधा हुई है। इसे कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी (CSR) कहा जाता है।

भारत में कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी के दायरे में कौन-कौन आता है?

भारत में कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी (CSR) के नियम अप्रैल 1, 2014 से लागू हैं। इसके अनुसार जिन कम्पनियाँ की सालाना नेटवर्क 500 करोड़ रुपये या सालाना आय 1000 करोड़ रु० की या सालाना लाभ 5 करोड़ रु० का हो तो उनको CSR पर खर्च करना जरूरी होता है। यह खर्च तीन साल के औसत लाभ का कम से कम 2% होना चाहिए। CSR नियमों के अनुसार, CSR के प्रावधान केवल भारतीय कंपनियों पर ही लागू नहीं होते हैं, बल्कि यह भारत में विदेशी कंपनी की शाखा और विदेशी कंपनी के परियोजना कार्यालय के लिए भी लागू होते हैं।

C.S.R. में क्या-क्या गतिविधियाँ की जा सकती हैं : C.S.R. के अन्तर्गत कंपनियों को बाध्य रूप से उन गतिविधियों में हिस्सा लेना पड़ता है जो कि समाज के पिछड़े या बंचित वर्ग के लोगों के कल्याण के लिए जरूरी हों।

इसमें निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल होती हैं:

1. भूख, गरीबी और कुपोषण को खत्म करना
2. शिक्षा को बढ़ावा देना
3. मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सुधारना
4. पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करना
5. सशस्त्र बलों के लाभ के लिए उपाय
6. खेल गतिविधियों को बढ़ावा देना
7. राष्ट्रीय विरासत का संरक्षण
8. प्रधानमंत्री की राष्ट्रीय राहत में योगदान
9. स्लम क्षेत्र का विकास करना
10. स्कूलों में शौचालय का निर्माण

भारत की कंपनियों द्वारा समाज के निचले तबके के कल्याण को बढ़ावा देना कंपनियों और सरकार दोनों के लिए दोनों हाथों में लड्डू होने जैसा है। CSR में खर्च होने के जहाँ एक तरफ लोगों के कल्याण के लिए होने वाले खर्च से सरकार को कुछ राहत मिलती है वहीं दूसरी तरफ लोगों की नजर में कंपनियों की इमेज भी एक अच्छी कंपनी की बनती है जिससे कि कंपनी को अपने उत्पादों को बेचने में आसानी होती है।

(उपर्युक्त लेख इंटरनेट से संग्रह किया गया है)

मनीष श्रीवास्तव
सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम और भापनि के मानव संसाधन विभाग

परिचय : केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (CPSE) भारतीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। ये उपक्रम न केवल देश के आर्थिक विकास में योगदान देते हैं, बल्कि लाखों लोगों को रोजगार भी प्रदान करते हैं। तेजी से बदलते व्यावसायिक परिदृश्य और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच मानव संसाधन (HR) प्रबंधन की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है। मानव संसाधन अब केवल भर्ती और प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संगठन की रणनीतिक दिशा को भी आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आधुनिक मानव संसाधन प्रथाएं केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम को अधिक प्रतिस्पर्धी, लचीला और नवाचारी बना रही हैं।

मानव संसाधन प्रबंधन की नई पहल

1 नए अप्रेंटिसशिप प्रशिक्षण ट्रेड की शुरुआत की- "कच्चे जूट की खरीद" भारतीय पटसन निगम लिमिटेड ने "कच्चे जूट की खरीद" के नए अप्रेंटिसशिप प्रशिक्षण (प्रशिक्षुता (प्रशिक्षण कार्यक्रम) ट्रेड की शुरुआत की है। यह नया ट्रेड विशेष रूप से कच्चे जूट की खरीद, ग्रेडिंग, परिवहन और भंडारण पर केंद्रित है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को जूट उद्योग में आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करना है, ताकि वे इस क्षेत्र में सफल करियर बना सकें और उद्योग के विकास में योगदान दे सकें।

1.1 प्रशिक्षण की मुख्य विशेषताएं:

कच्चे जूट की ग्रेडिंग :

- गुणवत्ता मापदंड: जूट की गुणवत्ता को मापने के लिए विभिन्न मापदंडों की जानकारी।
- ग्रेडिंग तकनीक: जूट की ग्रेडिंग के विभिन्न तकनीकों और उपकरणों का उपयोग।
- ग्रेडिंग के मानक: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार जूट की ग्रेडिंग।

खरीद प्रक्रिया:

- खरीद नीति: निगम की खरीद नीति और प्रक्रियाओं का अध्ययन।
- बाजार सर्वेक्षण: जूट बाजार का सर्वेक्षण और मूल्य निर्धारण।
- विपणन रणनीति: जूट उत्पादों के विपणन की रणनीतियाँ और तकनीक।

परिवहन और भंडारण:

- परिवहन तकनीक: कच्चे जूट के परिवहन के लिए आवश्यक तकनीक और विधियाँ।
- भंडारण तकनीक: कच्चे जूट के उचित भंडारण के लिए तकनीक और प्रथाएं।
- इन्वेंटरी प्रबंधन: इन्वेंटरी प्रबंधन के सिद्धांत और अभ्यास।

1.2 प्रशिक्षण की अवधि और पात्रता: इस विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम

की अवधि 01 वर्ष तक होती है और न्यूनतम शैक्षिक योग्यता/आयु मानदंड भारतीय पटसन निगम द्वारा निर्धारित किए गए हैं।

1.3 अप्रेंटिसशिप कार्यक्रम (प्रशिक्षुता प्रशिक्षण कार्यक्रम) का देश के जूट उद्योग पर प्रभाव:

युवाओं के लिए लाभ:

- अखिल भारतीय रोजगार के अवसर: प्रशिक्षुओं को राष्ट्रव्यापी जूट उद्योग में विभिन्न रोजगार के अवसर प्रदान करना।
- आर्थिक स्वतंत्रता: प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त वजीफा युवाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करता है।
- व्यक्तिगत विकास: प्रशिक्षण के माध्यम से व्यक्तिगत और व्यावसायिक कौशल में सुधार।

भारत के जूट क्षेत्र को लाभ:

- कुशल कार्यबल: राष्ट्रव्यापी जूट क्षेत्र के लिए कुशल और प्रशिक्षित कार्यबल का निर्माण करना।
- उत्पादकता में वृद्धि: उच्च गुणवत्ता वाले जूट उत्पादन और प्रसंस्करण के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि।
- स्थिरता: जूट उद्योग में स्थिरता और निरंतरता बनाए रखना।

2. नए कर्मचारियों के लिए संरचित प्रेरण कार्यक्रम : आज के गतिशील और प्रतिस्पर्धी कारोबारी माहौल में संरचित प्रेरणा कार्यक्रम भारतीय पटसन निगम लिमिटेड के लिए आधारशिला बन गए हैं, जिसका उद्देश्य नए कर्मचारियों को प्रभावी ढंग से एकीकृत करना है। ये कार्यक्रम सावधानी पूर्वक डिज़ाइन किए गए हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि नए कर्मचारी न केवल अपनी भूमिका और ज़िम्मेदारियों को समझें, बल्कि शुरू से ही संगठन की संस्कृति, मूल्यों और रणनीतिक उद्देश्यों के साथ भी तालमेल बिठाएँ।

कर्मचारी प्रेरण किसी भी संगठन के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कंपनी के भीतर नए कर्मचारियों के एकीकरण और सफलता के लिए माहौल तैयार करता है। यह प्रारंभिक अवधि न केवल कर्मचारियों को उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से परिचित कराती है बल्कि संगठन की संस्कृति, मूल्यों और परिचालन प्रक्रियाओं के बारे में आवश्यक जानकारी भी प्रदान करती है। प्रभावी प्रेरण कार्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि कर्मचारी शुरू से ही स्वागत, समर्पित और सार्थक रूप से योगदान करने के लिए तैयार महसूस करें। अपेक्षाओं को स्पष्ट करके, आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करके और सहकर्मियों के साथ संबंधों को बढ़ावा देकर, प्रेरण बढ़ी हुई उत्पादकता, नौकरी की संतुष्टि और दीर्घकालिक प्रतिधारण के लिए आधार तैयार करता है। अंततः, एक व्यापक कर्मचारी परिचय प्रक्रिया में निवेश करने से न केवल नए कर्मचारियों के लिए सीखने की प्रक्रिया में तेजी आती है, बल्कि संगठन के मिशन और लक्ष्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता भी मजबूत होती है।

2.1 संरचित प्रेरण कार्यक्रमों के घटक:

स्वागत सत्र: वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा एक औपचारिक परिचय संगठन के मिशन, दृष्टि और मुख्य मूल्यों पर जोर देते हुए माहौल तैयार करता है।

- **संगठनात्मक अवलोकन:** विस्तृत सत्र कंपनी के इतिहास, संरचना, संचालन और प्रमुख हितधारकों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- **कार्य-विशिष्ट सत्र:** नए कर्मचारियों की विशिष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के अनुरूप सत्र उन्हें उनके कर्तव्यों, कार्यों और प्रदर्शन अपेक्षाओं को समझने में मदद करते हैं।
- **प्रदर्शन उद्देश्य:** मानव संसाधन विभाग/निगम प्रबंधन द्वारा एक औपचारिक परिचय संगठन के मिशन, दृष्टि और मुख्य मूल्यों पर जोर देते हुए माहौल तैयार करता है।
- व्यावहारिक अनुभव: नए कर्मचारियों के लिए अनुभवी सहकर्मियों के साथ काम करने या अपने सीखने को लागू करने के लिए वास्तविक दुनिया की परियोजनाओं में भाग लेने के अवसर।
- **संगठनात्मक संस्कृति:** कंपनी की संस्कृति, मानदंडों और कार्य वातावरण के बारे में जानकारी, ईमानदारी, नवाचार और ग्राहक अभिविन्यास जैसे मूल्यों पर जोर देना।
- **टीम एकीकरण:** नए कर्मचारियों और मौजूदा टीम के सदस्यों के बीच संबंधों और टीमवर्क का निर्माण करने के लिए बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देने वाली गतिविधियाँ।
- **मेंटरशिप प्रोग्राम:** नए कर्मचारियों को मेंटर या दोस्तों के साथ जोड़ना जो पूरे इंडक्शन अवधि के दौरान मार्गदर्शन, समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।
- **फीडबैक लूप:** प्रगति का आकलन करने, चिंताओं को दूर करने और इंडक्शन प्रक्रिया में आवश्यक समायोजन करने के लिए नियमित जांच और फीडबैक सत्र।

2.2 संरचित प्रेरण कार्यक्रमों के लाभ

- **उत्पादकता में सुधार:** नए कर्मचारियों को सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और संसाधनों से लैस करके,

संरचित प्रेरण कार्यक्रम एकीकरण प्रक्रिया को गति देते हैं और उत्पादकता बढ़ाते हैं।

- **कर्मचारी जुड़ाव में वृद्धि:** एक सुनियोजित प्रेरण नए कर्मचारियों के बीच अपनेपन और प्रतिबद्धता की भावना को बढ़ावा देता है, टर्नओवर को कम करता है और प्रतिधारण दरों को बढ़ाता है।
- **संरेखित संगठनात्मक लक्ष्य:** संगठनात्मक लक्ष्यों और मूल्यों का स्पष्ट संचार यह सुनिश्चित करता है कि नए कर्मचारी कंपनी की सफलता में योगदान देने में अपनी भूमिका को समझें, उद्देश्य की साझा भावना को बढ़ावा दें।
- **सक्षमता के लिए कम समय:** प्रभावी प्रेरण कार्यक्रम नए कर्मचारियों को पूरी तरह से उत्पादक बनने में लगने वाले समय को कम करते हैं, व्यवधानों को कम करते हैं और दक्षता को अधिकतम करते हैं।

निष्कर्ष: केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में मानव संसाधन विभाग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक मानव संसाधन प्रथाएं केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम को अधिक प्रतिस्पर्धी, लचीला और नवाचारी बना रही हैं। मानव संसाधन के विभिन्न पहलुओं में सुधार करके केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम अपनी कार्यक्षमता और लाभप्रदता में वृद्धि कर सकते हैं। इसलिए, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम के भविष्य को आकार देने में मानव संसाधन की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

दिनी मजुमदार राय
पति - संदीपन राय चौधुरी
कनिष्ठ सहायक
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

सुरक्षित कॉल की वॉर भारत में महिला सुरक्षा

लैंगिक समानता और कानूनी सुधारों में प्रगति के बावजूद भारत में महिला सुरक्षा एक गंभीर मुद्दा बनी हुई है। जबकि भारत विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है, गहरी जड़ें जमा चुके सामाजिक मानदंडों, पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण और अप्रभावी कानून प्रवर्तन के कारण महिलाओं की सुरक्षा से अक्सर समझौता किया जाता है। यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा और लिंग आधारित भेदभाव की घटनाएं महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती रहती हैं।

सांस्कृतिक कारक, जैसे लड़कों को प्राथमिकता देना और लैंगिक रूढ़िवादिता, महिलाओं की असुरक्षा में योगदान करते हैं। महिलाओं के लिए अपर्याप्त शिक्षा और रोजगार के अवसरों के कारण ये मुद्दे और भी जटिल हो गए हैं, जिससे उनकी स्वतंत्रता और अपराधों की रिपोर्ट करने की क्षमता सीमित हो गई है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र ख़राब कानून प्रवर्तन से पीड़ित हैं, जिससे महिलाएँ हिंसा के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाती हैं।

सरकार ने महिलाओं के खिलाफ अपराधों को रोकने के उद्देश्य से "निर्भया फंड" जैसी पहल और आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013 जैसे कड़े कानून पेश किए हैं। इसके अतिरिक्त, "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसे अभियान महिलाओं को महत्व देने और उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में सामाजिक बदलाव को प्रोत्साहित करते हैं। इन प्रयासों के बावजूद, कानूनों का कार्यान्वयन असंगत बना हुआ है और पीड़ित को दोष देना प्रचलित है।

भारत में महिला सुरक्षा को संबोधित करने के लिए न केवल कानूनी सुधार की आवश्यकता है बल्कि सांस्कृतिक परिवर्तन की भी आवश्यकता है। लड़कों को महिलाओं के प्रति सम्मान के बारे में शिक्षित करना, लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और कड़े कानून प्रवर्तन को सुनिश्चित करना स्थिति में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। एक सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए जहां महिलाएं बिना किसी डर के आगे बढ़ सकें, सरकार, समाज और व्यक्तियों के सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं।

बी.एन. भंसाली
मुख्य प्रबंधक (परि० / विप०)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

ज्ञान की बात...

पढ़े से कढ़ा अच्छा अर्थात् अनुभवहीन डिग्री-धारी की अपेक्षा अनुभवी-अनपढ़ बहुधा कई दर्जे अच्छा होता है।

मित्रों,

रईस घराने का एक अल्हड़ युवक विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरा करके अपने गाँव लौटा, सवेरे-सवेरे जींस कसकर, घोड़े पर बैठकर गाँव के बाहर निकल गया, थोड़ी दूर गया ही था कि उसने देखा कि नदी के किनारे धुनी रमाये अधेड़ उम्र के दो-तीन साधु आपस में कुछ बातचीत कर रहे थे, उनके कुछ शब्द युवक के कानों में पड़े, वह उत्सुकता वश घोड़े से उतर गया और साधु जनों से पूछने लगा, "महात्मा आप लोग क्या कह रहे हैं?"

उसमें से एक साधु बोला, कुछ नहीं! हम आपस में जीवन के कुछ महत्वपूर्ण सूत्रों पर चर्चा कर रहे थे।

आप सुनना चाहते हो?

युवक ने विस्मित नेत्रों से कहा, साधु महात्मा इसीलिए तो मैं उतरा हूँ।

साधु बोला, तो ध्यान से सुनो और गाँठ बाँध लो,

- अटको मत~जिस उद्देश्य से निकले हो, बिना उसकी प्राप्ति किये रुको मत, शास्त्रों में इसीलिए लिखा है, चरैवेति चरैवेति अर्थात् चलते रहो, चलते रहो।
- कटको मत~मधुरभाषी बनो, काट खाने वाली भाषा मत बोलो, चिड़चिड़े मत बनो।
- खटको मत~खटकने वाली बात मत कहो, चुभती, टीस मारती या गड़ने वाली बात मत बोलो।
- गटको मत~खाना कूच-कूचकर खाओ, उसे गटको मत।
- चटको मत~अवसर के अनुसार वेश-भूषा पहनो, बहुत चटकीला-भड़कीला, ठसक भरी, नाज़-नखरे वाली वेशभूषा उपयुक्त नहीं।
- छटको मत~समूह में काम कर रहे हो या समूह में हो तो वहाँ से सरकना नहीं चाहिए।
- झटको मत~सभा में बैठकर हाथ-पैर झटकना ठीक नहीं।
- फटको मत~सभा में रहते हुए तड़फड़ाना ठीक नहीं।
- भटको मत~अपने चुने हुए रास्ते से भटकना नहीं, अपने लक्ष्य से कभी च्युत न होना।
- मटको मत~धन, सम्पदा या उच्च पद मिल जाने पर भी इठलाना उचित नहीं, 'प्रभुता पाहि काहि मद नाहीं' का भाव मत पालो।
- लटको मत~ऊँची जगह से किसी चीज़ का सहारा लेकर लटकना ख़तरे वाली चीज़ है, इससे सम्भल कर रहो।
- सटको मत~किसी विद्वत-सभा में बैठे हो या किसी गंभीर विषय पर चर्चा चल रही हो, विचार-मंथन हो रहा हो तो वहाँ से धीरे-से खिसक जाना अभद्रता है।

मित्रों, विश्वविद्यालय से साहित्य की ऊँची डिग्री लेकर तुरंत लौटा वह प्रखर स्नातक उन डिग्री विहीन साधुओं के व्यावहारिक ज्ञान पर हतप्रभ था, उसकी झोली में सहज ही अपार रत्न आ पड़े थे, उन विद्वान साधुओं को प्रणाम करके वह अपने घर लौट आया, सोचने लगा सदियों से संग्रहीत, ज्ञान भारतवर्ष के गाँव-गाँव में बिखरा पड़ा है, वह भी अत्यंत सारगर्भित संक्षिप्त शब्दों में। (उपर्युक्त लेख संग्रह किया हुआ है)

योग

वरुण कुमार पोद्दार
लेखाकार
प्रधान कार्यलय, कोलकाता

वर्तमान में योग के प्रति लोगों में भिन्न-भिन्न धारणाएं हैं। कुछ लोग योग से भारतीय पद्धति की विशिष्ट शारीरिक व्यायाम समझाते हैं, कुछ लोग इसे श्वास-प्रश्वास के अभ्यास एवं शारीरिक आराम की विधि मानते हैं। योग चिकित्सक इसे वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में मानते है। कुछ तो योग को एक विशिष्ट धर्म समझते है। उक्त धारणाएं कुछ हद तक योग के संदर्भ में तर्कसंगत है। परंतु योग इन सभी से बहुत व्यापक है।

'योग' एक संस्कृत शब्द है। पाणिनी 'संस्कृत भाषा के वैयाकरण' के अनुसार 'योग' शब्द का मूल 'युज् समाधौ, 'युजिर् योगे' अथवा 'युज् संयमने' है। साधारणतः 'योग' शब्द का अर्थ होता है – संयोग अथवा जोड़।

अनेक ऋषि-मुनियों एवं संतों ने योग के संबंध में अपने भिन्न-भिन्न मत प्रकट किये है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार "चित्त की वृतियों का निरोध ही योग हैं"। अर्थात् व्यक्तित्व के चेतन, अवचेतन स्तरों पर नियंत्रण योग हैं। [योग सूत्र 1.2]

भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद्भगवदगीता में योग की परिभाषाएँ बतलायी है, उनमें से कुछ मुख्य परिभाषाएँ निम्नलिखित है:-

1. सफलता और असफलता दोनों को समान भाव से देखना ही योग है। [2.48]
2. कर्मों में कुशलता ही योग है। [2.50]
3. दुःखरूप संसार के संयोग से रहित ही योग है। [6.23] योग याज्ञवल्कय के अनुसार – जीवात्मा का परमात्मा से मिलन योग है।

अतः योग वह विज्ञानसम्मत जीवन शैली है, जिसके द्वारा हम शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन एवं एकाग्रता तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते है।

योग की उत्पत्ति एवं विकास : योग के संदर्भ में सर्वप्रथम उल्लेख वेदों में मिलता है। परवर्ती वैदिक ग्रन्थों जैसे उपनिषद में भी योग का उल्लेख मिलता है। सिंधु-सरस्वती सभ्यता में कुछ मोहरें मिली है। जिस में यौगिक मुद्रा के चित्र में उत्कीर्त है। भारत में योग की उत्पत्ति का समय 5000 वर्ष पूर्व माना जाता है। योग और सभ्यता का विकास भारत में गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत हुआ है। भगवान शिव को आदि योगी अथवा आदि गुरु माना जाता है।

विभिन्न ऋषियों के द्वारा योग के विभिन्न पक्षों एवं परम्पराओं की खोज एवं विकास की गई है। परंतु सभी पक्षों का लक्ष्य एक ही है। जैसे पर्वतारोही भिन्न पथों का उपयोग करते है परंतु अंतिम लक्ष्य पर्वत शिखर होता है। योग के मुख्य पथ है : (1) ज्ञान योग (2) भक्ति योग (3) कर्म योग (4) राज योग (5) हठ योग (6) मंत्र योग (7) नाद योग (8) स्वर योग (9) पांतजल योग।

योग के विकास के पश्चात इसे सामान्य जनों तक पहुंचाने में सबसे अधिक सफल रहे महर्षि पतंजलि। इन्होंने ईसा से कुछ शताब्दी पूर्व योग दर्शन की रचना की थी, जिसमें 196 लघु सूत्र है। इन्होंने सम्पूर्ण राजयोग को वैज्ञानिक ढंग से सूत्रबद्ध किया।

पातंजल योग : पातंजल योग सूत्र में मन के जिन पक्षों की चर्चा की गई है, वे आधुनिक मनोविज्ञान के मतों से भी ज़्यादा सूक्ष्म और सटीक है। इन सूत्रों को अपना कर व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास किया जा सकता है। यह व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक, चिकित्सात्मक, व्यावहारात्मक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक, सभी पक्षों को सुदृढ करता है। पातंजल योग को अष्टांग या अष्टपद योग भी कहा जाता है। इसमें योग की उच्चतम अवस्था अथवा परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आठ श्रेणीबद्ध सीढी या पद बताया गया है। अष्टांग की संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :-

1. यम :- प्रथम पद 'यम' है। 'यम' को हमें मानना हैं।

यम के अंग है :-

i. **अहिंसा :** मन, वाणी और शरीर से किसी प्राणी को कभी किसी प्रकार किंचिन्मात्र भी दुःख न देना अहिंसा है।

ii. **सत्य :** इंद्रिय और मन से प्रत्यक्ष देखकर, सुनकर या अनुमान करके जैसा अनुभव किया हो, ठीक वैसा का वैसा ही भाव प्रकट करने के लिए प्रिय और हितकर तथा दूसरे को उद्वेग उत्पन्न न करने वाले जो वचन बोले जाते है, उनका नाम सत्य है।

iii. **अस्तेय :** दूसरे द्वारा अर्जित या दूसरे के स्वत्व का अपहरण, छल या अन्य उपाय से अपना बनाना स्तेय (चोरी) है। चोरी न करना अस्तेय है।

iv. **ब्रह्मचर्य :** मन, वाणी और शरीर से होने वाले सब प्रकार के मैथुनों का सब अवस्थाओं में सदा त्याग करके सब प्रकार से वीर्य की रक्षा करना ब्रह्मचर्य है।

v. **अपरिग्रह :** अपने स्वार्थ के लिए मोह वश धन, संपत्ति और भोग सामग्री के संचय का परित्याग अपरिग्रह है।

2. नियम :- यह दूसरी सीढी है। इसे हमें करना है। नियम भी पाँच है।

i. **शौच :** शरीर, मन एवं वातावरण की सफाई एवं पवित्रता शौच है।

ii. **संतोष :** वर्तमान अवस्था में आनंद में रहना संतोष है।

iii. **तप :** अपने स्वधर्म एवं कर्तव्य का पूर्ण क्षमता से पालन करना तप है।

iv. **स्वाध्याय :** अच्छी पुस्तकों का पठन, मंत्र जप एवं स्वयं का अध्ययन ही स्वाध्याय है।

v. **ईश्वर प्रणिधान :** अपने कर्म एवं स्वयं को ईश्वर को समर्पित कर देना ईश्वर प्रणिधान है।

3 **आसन :** सुखपूर्वक बैठना या मुद्रा आसन है। आसन सिद्धि हो जाने से सभी प्रकार की पीड़ा सहन करने की शक्ति आ जाती है।

4 **प्राणायाम :** श्वास – प्रश्वास को अभ्यास के द्वारा स्वचालित से नियंत्रण करने की विधि प्राणायाम है।

5 **प्रत्याहार :** इंद्रियों की बाह्य वृत्ती को सब ओर से समेटकर मन में विलीन करने के अभ्यास का नाम प्रत्याहार है।

6 **धारणा :** किसी एक बिन्दु या वस्तु या ईश्वर पर अपने मन को एकाग्र करना धारणा है।

7 **ध्यान :** जिस वस्तु या ईश्वर पर मन एकाग्र किया जाता है, केवल उसी वस्तु का मन में प्रवाह चलना ध्यान है।

8 **समाधि :** ध्यान करते-करते जब चित्र ध्येयकार में परिणत हो जाता है, उसके अपने स्वरूप का अभाव सा हो जाता है, उसको ध्येय से भिन्न उपलब्धि नहीं होती, उस समय उस ध्यान का ही नाम समाधि हो जाता है।

आज के युग में योग की उपयोगिता : आज के योग में मनुष्य की आध्यात्मिक प्यास को शांत करने के लिए योग जल के समान उपयोगी है। योग सदा से हमारी संस्कृति रही है और इसी योग के बल पर हमारा देश हज़ार सालों तक दुःख, पीड़ा, आक्रमण, उत्पीड़न के बावजूद भी मूल रूप में जीवित रहा। उस मनुष्य के लिए, जो इस संसार में अनवरत संघर्ष, तनाव, दबाव, असंतोष एवं निराशा के वातावरण में जी रहा है, योग सुख-शांति एवं मानसिक संतुलन का संदेश लाता है। उसके लिए जो व्यापार, राजनीति और सांसारिक कार्यकलापों में उलझा है, योग पूर्ण विश्राम तथा मानसिक शांति देने वाला है। उसके लिए जो मानसिक क्षमताओं के विकास, अध्ययन एवं अनुसंधान इत्यादि कार्यों में व्यस्त है, योग आत्मनियंत्रण, आत्मानुशासन तथा सर्वोच्च उपलब्धियां का मार्ग प्रशस्त करता है। उसके लिए भी जो ईश्वर अथवा किसी धर्म के प्रति समर्पित है, किन्तु प्रार्थना में जिसका मन एकाग्र नहीं होता, योग एकाग्रता, सरलता निष्ठा आदि की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। जो समाधि में जाना चाहता है, मेरी निश्चित राय है उसके लिए योग के अतिरिक्त और कोई मार्ग हो ही नहीं सकता। अतः योग की अंतिम तथा सर्वमान्य परिभाषा यह हो सकती है की 'योग चेतना का विज्ञान है'।

योग का उद्देश्य एवं प्रयोजनः- योग एक पूर्ण विज्ञान है। इसका उद्देश्य है-शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास। योग एक ऐसी विधि है, जो मानव व्यक्तित्व के सभी पक्षों को विकसित करती है। योग से पूर्णता, शांति और शाश्वत आनंद की प्राप्ति होती है। योग समग्र शिक्षा की एक पद्धति है, शरीर, मन और बुद्धि की ही नहीं, आत्मा की भी।

योग का मुख्य प्रयोजन है, अपने अंदर वास्तविक सुख, शांति, और आनंद का साम्राज्य स्थापित करना। यह विद्या इतनी गहन है की आपके अंदर मन, भावना और अन्तःकरण के विज्ञान को तथा आत्मा के महाविज्ञान को क्रमशः प्रकाशित करती जाती है। आज इसकी क्रांति दुनियाभर में ज़ोरों से होती जा रही है और निकट भविष्य में आने वाली सर्वशक्तिशाली विश्व संस्कृति भी योग ही होगी।

योग के प्रचार प्रसार में भारतीय पटसन निगम अपनी भूमिका सार्थक रूप से निभा रही है। प्रत्येक वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के दिन योग सत्रह का आयोजन किया जाता है। इसमें आसन, प्राणायाम और ध्यान का सामूहिक अभ्यास किया जाता है। भारत सरकार के मिशन कर्मयोगी के द्वारा हमें सिखाया गया कि कार्यालय में भी योग अभ्यास करके शरीर एवं मन को स्वस्थ रखना है। योग अभ्यास से कर्मचारियों को शारीरिक और मानसिक विश्रांति प्राप्त होती है। इसके फलस्वरूप कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। योग के अभ्यास से हमारे व्यक्तित्व, पारिवारिक, सामाजिक और पेशेवर जीवन क्षेत्र का उत्थान होता है। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के विषय "स्वयं और समाज के लिए योग" का संकल्प लेते हुए, नियमित योग अभ्यास करना चाहिए।

किसी किताब को उसके आवरण से न आंकें

राजेश कुमार चौधरी
कनिष्ठ सहायक
कोलकाता आर. एल. डी. (कोलकाता)

"कहने वालों का कुछ नहीं जाता,
सहने वाले कमाल करते हैं,
कौन ढूँढे जवाब किसी की परेशानियों के,
लोग तो बस सवाल करते हैं"।

एक 18 साल की लड़की, ट्रेन की खिड़की से बाहर देख कर चिल्लाई, "पापा देखो पेड़ पीछे की तरफ जा रहे हैं"।

उसके पिता ने लड़की की तरफ देखा और एक छोटी सी स्माइल दी।

पास में बैठा एक आदमी उस लड़की की बचकानी बातें सुन रहा था। वो लड़की फिर से चिल्लाई "पापा, देखो बादल हमारे साथ-साथ चल रहे हैं"। इस बार फिर उसके पिता ने कुछ नहीं कहा और बस स्माइल दे दी।

इस बार पास में बैठे उस आदमी से रहा नहीं गया और उस लड़की के पिता पर बरस पड़ा, "आप अपनी लड़की को किसी अच्छे डॉक्टर के पास क्यों नहीं ले जाते, दिमाग ख़राब है इसका, अभी तो रात है वो भी अंधेरी"।

वो व्यक्ति मुस्कुराया और बोला, हाँ मैंने डॉक्टर को दिखाया और हम अभी अस्पताल से ही आ रहे हैं। मेरी लड़की जन्म से ही अंधी है, डॉक्टर उसे ठीक करने का प्रयास कर रहें है। यह सुनते ही पास बैठा आदमी स्तब्ध रह गया।

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि हमें बिना किसी के बैकग्राउंड को जाने कभी उन्हें जज नहीं करना चाहिए। इस दुनिया में हर किसी की ज़िंदगी की कुछ न कुछ कहानी होती है, जो हमें शायद ही पता हो, इसलिए किसी के बारे में कुछ भी सोचने से पहले या उन्हें जज करने से पहले, उन्हें ठीक तरह से जान लेना बहुत जरूरी है क्योंकि कभी-कभी सच हमारी सोच से बहुत अलग होता है।

हम अक्सर पूरी बातें जाने बिना ही लोगों के बारे में खुद ही कहानियाँ बनाना शुरू कर देते हैं। इस तरह के लोगों से हमें हमेशा दूर रहना चाहिए, यही इस कहानी का सारांश है।

हर घर तिरंगा

तोइशब ज्योति गोहाई
सहायक प्रबंधक (मा.सं.)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

"हर घर तिरंगा" एक पहल है, जिसे भारत सरकार द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत शुरू किया गया था। इस अभियान का उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ (2022) के उपलक्ष्य में हर भारतीय नागरिक को घर पर तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित करना था।

इस पहल का मकसद लोगों में देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करना और राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना है। इसके तहत लोगों से अपने घरों, कार्यालयों और अन्य स्थानों पर तिरंगा फहराने का आह्वान किया गया, ताकि राष्ट्रीय एकता और गौरव का माहौल बन सके।

अभियान को सोशल मीडिया और विभिन्न प्लेटफार्मों पर व्यापक रूप से प्रचारित किया गया और इसे सरकारी विभागों, संगठनों और आम नागरिकों द्वारा सक्रिय रूप से समर्थन मिला।

"हर घर तिरंगा" अभियान 2024 में भी उसी जोश और उत्साह के साथ मनाया गया था, जैसा कि पहले किया गया था।

वर्ष 2024, यह अभियान राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावना को और अधिक प्रबल बनाने का लक्ष्य रखता है। सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा इस अभियान को सफल बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों का आयोजन किया जा रहा था। सोशल मीडिया पर भी इस अभियान को व्यापक समर्थन मिल रहा था और लोग बड़ी संख्या में अपने घरों पर तिरंगा फहराकर इस पहल में भाग ले रहे थे।

भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार, भारत के नागरिकों को 9 से 15 अगस्त 2024 तक ध्वज फहराने के लिए आमंत्रित किया गया। उन्हें '#हरघरतिरंगाएकबारफिरसे' के साथ सेल्फी पोस्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था।

कलम की ताकत

घुट-घुट कर जिन छोड़ दे,
तू हवाओं का रुख मोड दे।
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगो के भरम को तोड़ दे॥

मंजिल की ओर अब कदम उठा,
पन्ना इतिहास में नया जोड़ दे।
उठना है तुझे अब गिरना नहीं,
बहाने मुश्किलों के तू छोड़ दे॥

तू अपना एक लक्ष्य बना,
घुट-घुट कर जीना छोड़ दे।
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगो के भरम को तोड़ दे॥

उठ जा छू ले अपना आसमां,
कामयाबी के निशान छोड़ दे।
तू बनाना लकीरें किस्मत की,
तू कर मंजिल अपनी फतह॥

घुट-घुट कर जीना छोड़ा दे,
तू हवाओं का रुख मोड दे ।
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगो के भरम को तोड़ दे॥

श्वेता कुमारी
(पति – नीरज कुमार, लेखाकार)
क्षेत्रीय कार्यालय-गुवाहाटी

जिंदगी

छोटी-सी जिंदगी हमारी
खुल कर जिया करो
कब दुख की बादल, कब सुख की छाया
इसलिए हर बात पर खुश रहो।
कोई नाराज रहे आपसे
उसके आवाज से खुश रहो
जो पास न हो आपके
उसकी आवाज से खुश रहो
जो हो न सके आपका
उसकी यादों से खुश रहो
जो बुरा चाहे आपका
उसकी दुआ किया करो
एक ही जिंदगी है हमारी
खुल कर जिया करो।

नवजीत दास
अतिरिक्त कनिष्ठ निरीक्षक
पातिलादाहा, डी.पी.सी., असम

नैतिकता या लाभ

नैतिकता और लाभ में संग्राम,
किसे चुने, किसे माने धाम।
लाभ कहें, “आओ मेरे पास,
संपत्ति, यंश, ऐश्वर्य का वास”।
नैतिकता बोले धीमी आवाज,
“सच के मार्ग पर रख विश्वास”।
लाभ के पीछे दुनिया भागे,
मूल्य और सिद्धान्त सब त्याग।
नैतिकता कहे, “मन की शांति,
सच्ची सुखी, सच्ची स्थिरता”।
लाभ की राहें चमकीली
पर अंत में रहती है खाली।
नैतिकता का पथ कठिनाई भरा,
पर अंत में होता सदा सुखी सहरा।
चुने सही, मन में हो प्रकाश,
नैतिकता और लाभ, यही है असली रास।

विनय गहलावत
कनिष्ठ निरीक्षक
कामाख्यागुड़ी डी. पी. सी., कूचबिहार

जा बेटी तू पराई है

श्रीराम सिंह
अति. कनिष्ठ निरीक्षक
इस्लामपुर डी. पी. सी., असम

क्यूँ दुनिया ने ये रस्म बनाई है। करके इतना बड़ा कहते है, जा बेटी तू पराई है। पहले दिन से ही उसको यह पाठ पढ़ाया जाता है, सजा के लाल जोड़े में दुल्हन बनाया जाता है। छुड़ा देती है बेटी से बाबुल का ये घर, क्यों दुनिया ने जालिम रस्म बनाई है। करके इतना बड़ा कहते है, जा बेटी तू पराई है। रोते हैं खुद फिर उसको भी बहुत रुलाते हैं। अपने हाथों से दरवाजे तक छोड़ आते हैं।

बेटी बचाएं बेटी पढ़ाएं

सुरजीत मण्डल
अति. कनिष्ठ निरीक्षक
भोटपट्टी डी. पी. सी, असम

"वो चिड़िया नहीं है रुकने वाली
जिसको कैद कर है रक्खा।
इरादे उसके है अटूट
मन में है उड़ने का सपना।
चाहे हो कितनी भी बाधा
ना बदलेगा उसका इरादा।
आओ हम भी कदम बढ़ाएं
उस चिड़िया को आजाद कराएं।
बेटी बचाएं, बेटी पढ़ाएं"

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

नारायण सरकार
कंटिजेंट
रामपुर (तोल्ला), डी. पी. सी., प. बं.

सर्व धर्म में सबसे ऊपर नारी है,
ये बेचारी नहीं राजकुमारी है,
निर्मल है वो गंगा का पवित्र पानी है,
ज्ञानी सरस्वती की निशानी है,
निडर दुर्गा की छाया है,
जब हर रूप में इसने साथ तुम्हारा निभाया है,
तो क्यों उसकी जन्म से पहले
मौत की नींद सुलाया है?
कन्या भ्रूण हत्या सबसे बड़ा पाप है,
बिना कन्या के ये पृथ्वी भी श्राप है,
सबसे बड़ा दान कन्या दान है,
उसके लिए बेटी को बचाना है बेटी को पढ़ना है।

पटसन की खुशबू

पटसन के रेशे, धरती का उपहार,
किसानों की मेहनत का सुंदर आकार।
हरे-हरे खेतों में पटसन की बुवाई,
भारत की भूमि को दी नई परछाई।
रस्सी, बोरी और सुंदर चटाई,
जूट से बनती है हर चीज भाई।
हर कोने में फैलाए हरियाली,
जूट की खुशबू, प्राकृतिक सौगात निराली।
भारत की समृद्धि, पटसन की कहानी,
हरे-भरे खेतों से झलके इसकी निशानी।

शशांक प्रताप
कनिष्ठ निरीक्षक
उपरहाली डीपीसी, असम

पाट की आत्मकथा

मैं पाट, पटुआ, सन, जूट आदि नामों से जाना जाता हूँ,
असम, बिहार, बंगाल एवं त्रिपुरा में उगाया जाता हूँ मैं।
तोसा एवं सादा मेरी है प्रजातियाँ मेस्ता (चन्नी) विमली
(चन्ना) मेरी उपजातियाँ,
दोमट मिट्टी को पसंद करता हूँ मैं
बलूआही मिट्टी में मेरी उपजातियाँ चन्नी (मेस्ता) चन्ना
(विमली) के रूप में बोया जाता हूँ मैं,
प्रभेद जे. आर. ओ. 204 तथा जे. पी. ओ. 2003m से
उत्पादन को बढ़ाया हूँ मैं,
पंक्ति में बोने से कृषक को खुशहाल बनाया हूँ मैं,
मेरे पत्ते एवं जड़ धरती में सड़कर,
धरती माँ को उर्वर बनाता हूँ मैं,
बहता पानी में पत्थर, बालू बोरा आदि से जब दबता हूँ मैं,
संठी से घुटकर तब खूब बिखरता हूँ मैं,
पर सोना पाउडर जब कृषक छिड़कता है मुझपर,
तब तो सुनहला रंग में अल्प दिनों में ही चमक उठता हूँ मैं,
फिर ग्रेड में भी प्रोन्नत हो जाता हूँ मैं,
और पाट कृषक को अधिक कीमत दिलवाता हूँ मैं,
गुणों का सिर्फ राजा हूँ मैं,
बार-बार मुझे लगाव, कृषकों से यह सिखाता हूँ मैं।

शंभू प्रसाद सिंह
अतिरिक्त सहायक विपणन प्रबंधक
गुलाबबाग डी.पी.सी. (बिहार)

चांदनी रात

शरद् पूनम की रात एक विशेष प्रकार की चांदनी रात होती है,
जो सभी के मन को मोह लेती है।
इस रात का सौंदर्य अद्वितीय होता है,
और जब हमने इसे गंगा नदी के तट पर देखने का निश्चय किया,
तो वह अनुभव अविस्मरणीय हो गया।
रात का समय था और आकाश में शरद् पूनम का चांद अपने पूर्ण यौवन पर था।
चांद की शीतल चांदनी पूरे आकाश को अपनी चांदनी से भर रही थी।
तारों की बारात इस चांदनी में और भी ज्यादा चमक रही थी,
मानो आकाश ने अपनी सबसे सुंदर साड़ी पहनी हो।
हम पाँच साथी गंगा नदी के तट पर पहुंचे तो
वहाँ का दृश्य स्वप्न जैसा प्रतीत हो रहा था।
पानी की लहरें किनारे से टकरा रही थीं,
मानो वे एक-दूसरे से गले मिल रही हों।
यह दृश्य इतना सुंदर था कि
मन को अनायास ही शांति और सुकून प्रदान कर रहा था।
ओस की बूंदें पत्तों पर मोती की तरह चमक रही थीं,
जो इस दृश्य को और भी मनमोहक बना रही थीं।
हम सब साथ मिलकर इस अद्भुत नज़ारे का आनंद ले रहे थे।
नदी के तट पर बैठकर हम चांदनी रात के इस सुंदरता को निहारते रहे।
कभी-कभी लहरों की हल्की आवाज और पक्षियों की चहचहाहट
इस शांति को और भी मधुर बना रही थी।
इस रात ने हमारे मन को एक नई ऊर्जा और ताजगी से भर दिया।
गंगा की पवित्रता, चांदनी की शीतलता और हमारे साथियों का सानिध्य,
सब मिलकर एक ऐसा अनुभव बना जो शब्दों में बयान करना मुश्किल है।
इस अनुभव ने हमें यह सिखाया कि
प्रकृति के साथ समय बिताना और उसकी सुंदरता का आनंद लेना
जीवन के अनमोल क्षणों में से एक होता है।
इस प्रकार की चांदनी रातें जीवन में बहुत कम आती हैं,
और जब भी आती हैं,
वे हमें यह एहसास कराती हैं कि
जीवन में सच्ची खुशियाँ इन्हीं छोटे-छोटे पलों में छुपी होती हैं।

पुरुषोत्तम हरि
उप प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय- बरहमपुर

गमले में आदमी

जड़ें धरती से जोड़ने की इच्छा,
आकाश छूने की इच्छा,
बाहें फैलाने की इच्छा
और हवा के साथ गाने की इच्छा,
इस तरह से जन्म लेता है
एक पेड़, एक फूल और फल।
यूँ तो धरती कम न थी,
पहाड़ भी थे,
नदी और तालाब भी थे
लेकिन हमने एक संस्कृति का विकास किया—
गमलों में फूल खिलाने की,
गमलों में पेड़ लगाने की
और उसे घर के किसी कोने में सजाने की।
हालाँकि हम बहुत ख़ुश थे
गमलों में पेड़ लगाकर,
उसमें लगे छोटे फलों को देखकर
और एक विशालता को संकीर्णता में क़ैद कर।
लेकिन यह एक चाल थी—
धरती और जड़ों के विरुद्ध,
बाहों के विरुद्ध,
ऊँचाई के विरुद्ध
और संगीत और सपनों के विरुद्ध।
इससे बे-ख़बर होकर
हमने देखा-देखी अंधाधुंध गमले लगाए
और पूरी धरती को अपने-अपने गमलों में बाँट लिया।
गमले लगाते-लगाते
एक सुबह हमने ख़ुद को गमलों में खड़े पाया।
रूपांतरण और मूल्यों के मरने की प्रक्रिया
कुछ ऐसे ही चुपके से होती है
कि आदमी को आभास तक नहीं होता
और अंदर से पूरा का पूरा ख़ाली हो चुका होता है,
केवल उसकी ख़ाल बची रह जाती है
जिसे हम ख़ाल का मोटा होना कहते हैं।
नुकीले से नुकीला शब्द
गमले में आते ही कुंद हो जाता है,
ऊँघने लगता है
और कहीं हो रहे हमले से अनजान रह जाता है।
उदार से उदार धर्म
गमले में आकर काठ बन जाता है
और राजनीति की सिगड़ी सुलगाने का
सामान बन जाता है।
एक विराट भावना
गमले में खड़ी होते ही पीली पड़ जाती है
और रंग बदलने की कला में माहिर हो जाती है।
जड़ें रुद्ध होने से ऊँचाई भी रुद्ध हो जाती है,
विस्तार सीमित होने से संवेदना

प्रधान कार्यालय, कोलकाता

जालपा भटनागर
पति - मनीष श्रीवास्तव
सहायक प्रबंधक (मा.सं.)

9 – 15 अगस्त 2024 के दौरान फारबिसगंज आरएलडी द्वारा 'हर घर तिरंगा' का आयोजन किया गया

दिनांक 03.8.2024 को नगांव क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित 'आर्गन डोनेशन दिवस'

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर दिनांक 02.09.2024 को आयोजित बेडमिंटन प्रतियोगिता

भापनि

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार की संस्था

पटसन भवन 3री और 4थी मंजिल, ब्लॉक सी एफ, एक्शन एरिया - 1, न्यू टाउन, कोलकाता 700156